(मासिक)
ज्ञानामृत
वर्ष 53, अंक 9, मार्च, 2018
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

शान्तिवन (आबूरोड) : 82 वीं शिव जयन्ति महोत्सव पर शिवध्वजारोहण करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी, ब्र.कु. निर्वैर भाई तथा देश विदेश से पधारे अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।

1

2

3

4

5

6

7

8

1.भरतपुर- राजस्थान के राज्यपाल महामहिम भ्राता कल्याणसिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.बबीता बहन। साथ में हैं ब्र.कु.संतोष बहन तथा ब्र.कु.गीता बहन। **2.भुवनेश्वर-** एंजल हाउस का उद्घाटन करते हुए उड़ीसा के राज्यपाल महामहिम भ्राता एस.सी.जमीर, ब्र.कु.शिवानी बहन, ब्र.कु.लीना बहन तथा अन्य ब्र.कु.बहनें। **3.गोरखपुर-**उत्तर प्रदेश केमुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ ज्ञान-चर्चा करते हुए ब्र.कु.पारुल बहन तथा ब्र.कु.बेला बहन। **4.ग्वालियर-** मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता शिवराजसिंह चौहान को व्यसनमुक्ति संकल्प-पत्र भेंट करते हुए ब्र.कु.अवधेश बहन, ब्र.कु.आदर्श बहन तथा ब्र.कु.सुधा बहन। **5.शिमला-**हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता जयराम ठाकुर को आबू पर्वत पर होने वाले अर्न्तराष्ट्रीय महासम्मेलन में आने का निमंत्रण देते हुए ब्र.कु.प्रकाश भाई, ब्र.कु.रेवादास भाई, ब्र.कु.शकुन्तला बहन तथा अन्य। **6. इंदौर-** चैतन्य देवियों की झांकी का उद्घाटन करते हुए मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता शिवराजसिंह चौहान, इंदौर विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष भ्राता शंकर लालबानी, विधायक भ्राता रमेश मेंदोला, विधायिका बहन उषा ठाकुर, ब्र.कु.हेमलता बहन, ब्र.कु.अनिता बहन, ब्र.कु.शशि बहन तथा ब्र.कु.उषा बहन। **7.जम्मू-** शिवजयंती महोत्सव में शिवध्वजारोहण करते हुए जम्मू-कश्मीर विधानसभा अध्यक्ष भ्राता कविन्द्र गुप्ता, स्वामी कुमार जी महाराज, ब्र.कु.सुदर्शन बहन तथा अन्य। **8.वाराणसी-**खादी ग्रामोद्योग उत्सव का उद्घाटन करते हुए उत्तर प्रदेश के कानून तथा न्याय राज्यमंत्री डॉ.नीलकंठ तिवारी, ब्र.कु.सुरेन्द्र बहन, आई.ए.एस.भ्राता ए.के.सिंह तथा ब्र.कु.दीपेन्द्र भाई।

संजय की कलम से

गुण.. गुण.. गुण की धुन लगा ले

जब मनुष्य इन सत्यताओं को भली-भाँति समझ जाता है कि 1.यह संसार परिवर्तनशील है, 2.इसमें सभी पदार्थ क्षण-भंगुर तथा नाशवान हैं, 3.जीवन की अवधि अनिश्चित है, तब वह इस संसार और यहाँ के व्यक्तियों तथा पदार्थों के प्रति अनासक्त भाव वाला हो जाता है। जैसे नाव नदी में रहते हुए भी उसके ऊपर रहती है, वैसे ही उसका मन भी उपराम-सा रहता है। उसमें लोभ और क्षोभ शान्त हो जाते हैं। वह दूसरों से छीना-झपटी नहीं करता। सांसारिक वैभवों और इन्द्रियों के विषयों से लतपत नहीं होता, न ही मित्रों-सम्बन्धियों के अनुराग की दलदल में धंसता है। वह हल्का होकर उड़ता-सा रहता है। वह बैल की तरह टब भर खाने की बजाय दो रोटी खाकर ईश्वरीय स्मृति का आनन्द लेता है। गरीब है तो क्या हुआ, भगवान तो उसका साथी है।

विरक्त भाव या उपराम वृत्ति के साथ-साथ जब उसे इस बात में भी दृढ़ निश्चय हो जाता है कि मनुष्य का सौभाग्य और दुर्भाग्य दोनों स्वयं उसी के कर्माधीन हैं, स्वर्ग या नरक की प्राप्ति उसके अपने दिव्य गुणों या अवगुणों ही के परिणामस्वरूप होती है, तब वह सद्‌गुणों की धारणा में और आसुरी गुणों के त्याग में पूरा ध्यान देता है।

यह दुनिया कर्मों का लेखा-जोखा है और सभी सम्बन्ध कर्मों ही के ताने-बाने से जुड़ते या टूटते हैं – ऐसा जानकर आत्मा और परमात्मा तथा साधना और सिद्धि के ज्ञान से युक्त होकर, वह सद्‌गुणों का विकास करने में ही लगा रहता है क्योंकि सूक्ष्म आत्मा के साथ सूक्ष्म गुण ही जाते हैं, बाकी बैंक-बैलेन्स तो बैंकों में ही धरे रह जाते हैं और पुत्र-पौत्र, यार-दोस्त भी शव की अग्नि में अपनी-अपनी लकड़ी डाल कर या सामग्री होम करके अपनी-अपनी राह लेते हैं। धुँआ तो आकाश में बिखर जाता है और राख को नदी में प्रवाहित करके, सब रो-धो कर अपने-अपने धन्धे में लग जाते हैं। जिस देह को सम्बन्धी-जन चूमते और गले लगाते थे या जिससे हाथ मिलाते थे, अब छू जाने पर भी नहा कर शुद्ध होना जरूरी समझते हैं।

अत: समझदार व्यक्ति यह सब तमाशा देख कर मन को समझाता है कि हे मन, तू सद्‌गुण धारण कर। अरे मन, यह काम कल पर न छोड़। क्या पता कल कोई दुर्घटना घट जाए, व्याधि आ जाए, क्षमता या सामर्थ्य ही न रहे। इसलिए हे मन, प्रभु से प्रीति लगा ले, आत्मिक ज्योति जगा ले और दिव्य गुणों का आसन-सिंहासन बना कर उस पर स्थित हो समाधि लगा ले। तू लफड़ों को छोड़ और अब अपनी दिशा को मोड़। ''गुण.. गुण..'' की धुन लगा ले।

अमृत-सूची

- कर्मों की गुह्यता (संपादकीय)......4
- होली का त्यौहार (कविता) 6
- पत्र संपादक के नाम............ 7
- रंग दे चुनरिया..................8
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के....9
- बाबा का विशेष बच्चा 11
- समय-सारणी के साथ संकल्प..13
- क्षमा – जीवन का आभूषण 14
- सहधर्मिणी 15
- सोवत है, सो खोवत है... 18
- परमात्म शक्ति की कमाल 19
- हमारे भाग्य की कलम.........21
- पग-पग पर मिली बाबा की मदद.22
- दैनिक जीवन में 'मुरली' 23
- श्रद्धांजली 24
- मेरा बाबा बना कमिश्नर.........25
- काल्पनिक 'ब्रह्मास्त्र'............26
- बाबा का फरमान (कविता) 28
- होली का शुभ सन्देश..........29
- देश के उत्थान में..............30
- सृजनहीनता अर्थात् परनिन्दा....31
- सचित्र समाचार............... 32
- ज्ञान और योग ने ... .34

सदस्यता शुल्क

	भारत	विदेश
वार्षिक	100 /-	1,000/-
आजीवन	2,000 /-	10,000/-

शुल्क '**ज्ञानामृत**' के नाम से ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- 'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान, भारत।**

For Online Subscription

Bank Name : State Bank of India
A/c Holder Name : Gyanamrit
A/c No. : 30297656367
Branch Name : PBKIVV, Shantivan
IFSC Code : SBIN0010638

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :
Mobile : 09414006904, 09414423949
Email : hindigyanamrit@gmail.com
: omshantipress@bkivv.org

कर्मों की गुह्यता

संसार में समस्त पाप सुख के लिए किए जाते हैं, दुख के लिए नहीं। मनुष्य आर्थिक प्रलोभन के लिए झूठ बोलता है। वह सोचता है कि जरा-सी जीभ हिलाने से हजारों के वारे न्यारे हो जाएंगे और फिर उस धन से संसार के भोग भोगूँगा। यही हाल काम, क्रोध, मोह के वश पाप करने वालों का है। ये सब विकार सुख की इच्छा से पनपते हैं परन्तु सोचने की बात है कि क्या पाप का फल सुख हो सकता है? पाप का फल तो दुख ही होगा। उस दुख से बचने के लिए पाप का परित्याग आवश्यक है।

वाणी

एक बार एक बच्चे ने दूसरे से बोला कि हम कुत्ते को मजा चखायेंगे। दूसरे दोस्त ने इस बोल को तुरंत स्वीकार कर लिया और एक कुत्ते को पकड़कर ले आये। उसकी पूँछ में पटाखे की लड़ी बांधकर आग लगा दी। इस कारण बेचारा कुत्ता चिल्लाते हुए और कूदते हुए इधर-उधर दौड़ता रहा। पटाखे बजते रहे परन्तु बच्चे खुशी का डान्स करने लगे, कुत्ते को बचाने वाला कोई नहीं, यह तो पाप है। हर एक को अपने पाप की सजा स्वयं ही काटनी पड़ती है। एक ने बोला और 20 बच्चों ने माना इसलिए सभी पाप के भागीदार बन गये। बड़े होकर बीस के बीस इकट्ठे किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं। इस जन्म में नहीं तो अगले जन्म में अलग-अलग जगह जन्म लेकर भी एक साथ दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अन्य तरीके से कर्मफल सामने आ सकता है पर तब याद नहीं रहता कि यह किस कर्म का फल है। इसलिए कर्मगति जल्दी समझ में नहीं आती।

चोरी

कई बार हम किसी के धन की चोरी नहीं करते परन्तु किसी की शान्ति की या उसके समय की चोरी जाने-अनजाने कर लेते हैं। मान लीजिए, हम टी.वी.जोर से चलाते हैं, पड़ोस में रहने वाला एक बीमार बुजुर्ग सो नहीं पा रहा, उसकी शान्ति भंग हो रही है, तो यह भी तो उसकी शान्ति की चोरी हो गई ना। कई बार हम इतनी जोर से बातें करते हैं कि दूसरा ना सुनना चाहते हुए भी उन्हें सुनने को मजबूर होता है। स्टेशन या सार्वजनिक स्थानों पर भी हम जोर से बोलकर दूसरों की स्थिरता भंग करते हैं और अपनी ओर उनका ध्यान खींचकर उनके समय की चोरी कर लेते हैं।

पशु नहीं, पशु जैसे संस्कार

कर्मगति के अनुसार मनुष्य पशु या जन्तु नहीं बनता पर अपने संस्कार वैसे बना लेता है। यदि दो मनुष्य परस्पर द्वेष और दुर्भावना से व्यवहार करते हैं, तब मानो कि वे साँप और नेवले जैसे हैं। यदि किसी मनुष्य को कहा जाये कि आप तो साँप हो तो वह बुरा मान जाता है परन्तु उसे साँप जैसा व्यवहार भी तो नहीं करना चाहिए न। जैसे छिपकली पतंगों को हड़पने की ताक में बैठी रहती है वैसे मनुष्य भी दूसरे मनुष्यों को हड़पने, उन पर हिंसा करने, उन्हें लूटने-खसूटने का कर्म करता है तो सूरत मानव की होते भी सीरत (चाल-चलन) तो जन्तु जैसी ही कही जाएगी। आजकल नर या नारी का रोगी हृदय निकाल कर उसके स्थान पर दूसरा हृदय आरोपित करने के लिये तो ऑपरेशन होते हैं परन्तु मनुष्य के विकारी संस्कार निकालकर उसके मन में पवित्रता स्थापित करने

का कार्य ईश्वरीय ज्ञान द्वारा होता है। दिल में परमात्मा शिव की याद बसाने से ही मनुष्य का मनोपरिवर्तन अथवा 'हृदय परिवर्तन' होता है।

दुर्गुण रूपी छेद

पानी से भरे एक बर्तन को अगर नदी में छोड़ दिया जाए तो वह नहीं डूबेगा। यदि उसमें छेद हो तो वह अवश्य डूब जायेगा। मानव जीवन भी उस बर्तन की तरह ही है, जहाँ उसमें दुर्गुण रूपी छिद्र हुआ, समझ लो वह संसार रूपी सागर में डूबने वाला ही है। काम, क्रोध, लोभ, अहंकार, मोह आदि सभी अवगुण रूपी छिद्र हैं। दुर्गुण कोई भी हो, व्यक्ति का जीवन बर्बाद करने हेतु पर्याप्त है। उससे मनुष्य की विश्वसनीयता खत्म हो जाती है और उसके निकट सम्बन्धी भी उससे दूरी कर लेते हैं।

जब्त हो जाएगा मूल भी

आज के समाज में अमीरी-गरीबी के भेद की खाई बहुत गहरी होती जा रही है। परन्तु क्या हमने कभी सोचा, वास्तव में अमीर कौन? देने वाला अमीर है और लेने वाला गरीब। क्रोधी गरीब है क्योंकि उसके पास शान्ति रूपी धन नहीं है। सबसे बड़ी अमीरी तो गुणों की है। गुणवान ही धनवान है क्योंकि धन का सुख भी तभी मिलता है जब जीवन में गुण हों। यदि कोई एक लाख मासिक कमाता है तो भी चार पेट (माता-पिता और दो बच्चे) भरता है और कोई दस हजार मासिक कमाता है, तो भी चार पेट ही भरता है। अमीर तो हम उसे कहें जो 10-20 अन्य पेट भरने के बाद अपना भरता हो और यदि किसी खाली पेट को भरने के बजाए पेटियाँ भरने में लगा है तो वह अवश्य ही समझ से, बुद्धि से भी गरीब है क्योंकि किसी का पेट भरने पर भले ही भगवान पुण्य रूपी ब्याज दे दे पर पेटी भरने के बदले ब्याज तो क्या मूल भी जब्त होना निश्चित है।

जमीन और जमीर

एक जमींदार के दो बेटे थे। बड़ा भाई अहंकारी व लालची था जबकि छोटा, मेहनती व परोपकारी था। जमींदार की मृत्यु के बाद बड़े भाई ने जमींदारी सँभाली तो सब उससे त्रस्त हो गए। छोटा भाई चोरी-छिपे लोगों की मदद करने लगा तो बड़े भाई को यह नागवार गुजरा। उसने छोटे भाई को थोड़ी-सी जमीन देकर घर से निकाल दिया। छोटे भाई ने उस जमीन पर आम का बगीचा लगाया और उसकी देखभाल करने लगा। देखते-देखते पेड़ फलने-फूलने लगे। रास्ते के मुसाफिर बगीचे के मीठे फल खाकर छोटे भाई को दुआएँ देते हुए जाते।

धीरे-धीरे छोटे भाई की शोहरत पहले से भी अधिक होने लगी। अहंकारी भाई ने सोचा कि यदि वह भी अपनी जमीन पर बगीचा लगवाए तो लोग उसकी भी प्रशंसा करेंगे। यह सोचकर उसने बगीचा लगवाया और उसकी देखभाल के लिए कई सारे मजदूर रख दिए परंतु उन पेड़ों पर एक भी फल नहीं लगा। दुखी होकर उसने एक संत से इसका कारण पूछा। संत आए और दोनों भाइयों के बगीचे में एक-एक दिन रहे। इसके उपरांत उन्होंने बड़े भाई से कहा, 'पुत्र, तेरे बगीचे में फल न आने के पीछे कारण जमीन का दोष नहीं बल्कि जमीर का दोष है। इसके पीछे कारण तेरा अहंकार है। तू अहंकार छोड़ कर परोपकार की भावना से वृक्ष लगाएगा तो ये फल भी देंगे और शोहरत भी।'

राक्षस और देवता में अंतर

राक्षस के जो चित्र दिखाये जाते हैं उसमें राक्षस के सींग, लम्बे-लम्बे दाँत, लम्बे-लम्बे नाखून व भयंकर रूप दिखाया जाता है। क्या कभी ऐसे राक्षस थे? अगर ऐसे होते तो जरूर आज भी उनका अंश होता। राक्षस व देवता – प्रवृत्ति का नाम है। सींग का मतलब है आक्रामक होना, बिना कारण के किसी पर हमला कर नुकसान पहुँचाना। लम्बे दाँतों का मतलब है माँसाहारी होना, दाँतों से चीरफाड़ करने वाला होना। लम्बे नाखून का मतलब है चोरी, लूट करने वाला व लोगों की सुख, शान्ति छीनने वाला। देवता का मतलब है देना; शिक्षा, प्रेरणा, मदद व परिस्थिति के

अनुसार जो चाहिए वह देना। देवता लेता नहीं है। हम ही कर्मों अनुसार राक्षस और हम ही कर्मों अनुसार देवता हैं।

आत्मा अमर और अविनाशी है। एक जन्म में जो करती है, आने वाले जन्म में या आगे के और जन्मों में भी उसका फल पाती है। जैसे फल की श्रेणी को देखकर उसके बीज की श्रेणी का अहसास हो जाता है, इसी प्रकार वर्तमान जन्म की प्राप्तियों को देखकर पूर्वजन्म (पिछले जन्मों) में बोए गए बीजों की श्रेणी का अहसास हो जाता है। यदि वर्तमान में तन, मन, धन, जन की प्राप्तियाँ सन्तोषजनक नहीं तो अवश्य कर्म रूपी बीज ऐसे बोए गए जो सन्तोषजनक फल (परिणाम) नहीं दे सके।

हम पूर्व जन्मों को नहीं जानते

कई बार हमें लगता है कि जिस व्यक्ति की दुर्घटना में अकाल मृत्यु हुई और जिसकी बीमारी में अकाल मृत्यु हुई वे बहुत अच्छे थे, न तो उनमें कोई व्यसन था, परिवार वाले भी उनके कर्मों से खुश थे, फिर उनके किस कर्म का फल उन्हें मिला? इसके उत्तर में हम कह सकते हैं कि मानव जीवन एक धारावाहिक की तरह है। जिस प्रकार 'महाभारत' को टी.वी.पर कई किश्तों में दिखाया गया उसी प्रकार मानव के एक जन्म को यदि एक किश्त माना जाए तो वह जन्म-पुनर्जन्म से बनी 84 किश्तों वाले धारावाहिक का पार्टधारी है। महाभारत की एक किश्त में दुर्योधन को भीम के हाथों मरते दिखाया गया है। अगर किसी ने पिछली किश्तें न देखी हों और उसे दुर्योधन के काले कारनामों का ज्ञान न हो तो वह भीम को हत्यारा मानेगा और कहेगा, दुर्योधन तो निर्दोष है। इसी प्रकार वर्तमान जीवन में जिसकी दुर्घटना या बीमारी में अकाल मृत्यु हुई है वह पिछली किश्तों (जन्मों) में कर्मों के कौन-से बीज बोकर आया है, यह हम नहीं जानते। पर यदि फल कड़वा है तो बीज भी कड़वे फल का ही बोया गया है, यह निश्चित है।

ब्र.कु. आत्म प्रकाश

होली का त्यौहार

ब्रह्माकुमारी संध्या, अलवर (राजस्थान)

होली का यह त्यौहार, है संगमयुग की यादगार।
भर-भर ज्ञान की पिचकारी, करें सब पर बौछार।।

गुणों का लगा कर खूब गुलाल,
बन जायें हम प्रभु-प्रिय लाल,
नित नाचें और गायें हम, खुशियों के मल्हार।
होली का यह त्यौहार-----------

हम प्रभु की प्यारी आत्मा, हम हैं प्रह्लाद,
दिल ही दिल में करते रहते हैं हम उसको नित याद,
हिरण्यकश्यप छिपे वेश में दुर्गुण और विकार,
जो करता रहता है रूह पर वार, बारम्बार,
फिर भी हार नहीं खाते हम, पहनें विजय का हार।
शिव बाबा करते हैं रक्षा, ले नर तन अवतार।।
होली का यह त्यौहार-----------

बिसरो बात पुरानी जो हो ली,
गाओ गीत, बनाओ टोली,
प्रभु पिया की मैं हमजोली,
मस्तक पर सुहाग की रोली,
बरसेगा सुख-सावन, बहेगी प्रेम की रसधार
होली का यह त्यौहार-----------

जलेगी जब दुष्कर्मों की होलिका,
रंग लगेगा ईश्वरीय शक्तियों का,
महत्त्व शाश्वत यही होली का,
पर्व का यही है सच्चा सार, खोले जो भाग्य के द्वार।
होली का यह त्यौहार---------

‘पत्र’ संपादक के नाम

ज्ञानामृत का प्रत्येक अंक मन को छू जाता है। जैसे ही पत्रिका हाथ में आती है, एक साथ पूरी पढ़ने का मन करता है। इसमें सम्पादकीय प्रेरणाप्रद और मर्मस्पर्शी होता है। दिसम्बर माह के सम्पादकीय का यह वाक्य बहुत अच्छा लगा ‘यदि इन्द्रियाँ बाहरी जगत में उलझ कर शक्तियों का क्षरण करने का कारण बनती हैं तो ये आत्मा के छिपे श्रेष्ठ गुणों, कलाओं और शक्तियों को बाहरी जगत में प्रकट करने का माध्यम भी तो हैं।’ ‘दादी जी के प्रश्नोत्तर’, ‘धर्मभ्रष्ट से धर्मनष्ट’, ‘धर्म और अध्यात्म’ ‘शराब और झगड़ा – दोनो छूट गये’, शिवानी बहन का लेख, ‘परमात्मा का संग बचाता है कुसंग से’ ऐसे-ऐसे हृदयस्पर्शी लेख आत्मा को भरपूर कर देते हैं। कोटि-कोटि धन्यवाद।

रमेशचन्द्र गुप्ता, नैनवा, बून्दी (राजस्थान)

‘त्याग और सेवा की मूरत माता’ विषयक सिलसिलेवार लेख पूर्णरूप से मानवीय संवेदना से भरपूर एक जीवंत लेख है। माता-पिता एवं बुजुर्गों के प्रति सेवा-भाव को ऊँचा करने में और लगातार बढ़ते हुए वृद्ध-आश्रमों को घटाने में यह सहायक है। वास्तव में हम माता-पिता की सेवा नहीं करते बल्कि उनकी सेवाओं के सदा ऋणि होते हैं जिनकी हम सिर्फ अदायगी करते हैं। ऐसे सारगर्भित लेखन एवं प्रकाशन के लिए पूरी ज्ञानामृत टीम को कोटिश: धन्यवाद!!

भाई धनेश्वर प्रसाद, सेन्ट्रल जेल, रायपुर (छ.ग.)

ज्ञानामृत पत्रिका परमात्मा से लगन की अगन बढ़ाने का प्यारा माध्यम है। अक्टूबर, 2017 अंक में ‘मैं शरीर हूँ’ या ‘मेरा शरीर है’ लेख आत्मा के दागों को चेक कर हटाने की ओर मन को अग्रसर करता है। ‘त्याग व सेवा की मूरत माता’ बहुत सुन्दर भावों का झरना है। ‘पत्थर भी पिघलते देखे हैं’ तथा ‘सुख सकारात्मक सोच का’ सराहनीय हैं। ‘वृद्धावस्था को बनायें सुखी, शान्त एवं आनन्दमय’ में लेखक के सुझाव सार्थक हैं। नवम्बर मास में ‘राजयोग से बनते हैं रायल संस्कार’ लेख हर उम्र की आत्मा के लिए प्रेरणादायी है। सबसे खास – पत्रिका के हर पृष्ठ के नीचे लिखा स्लोगन इसके महत्व को पदमगुणा बढ़ाकर, आत्मा की ज्योति को जगा देता है। सभी लेखकों को साधुवाद व शुभकामनायें।

ब्र.कु.सन्तोष राठौर, जीवन पार्क (नई दिल्ली)

अक्टूबर, 2017 अंक में ‘वृद्धावस्था को बनायें सुखी, शान्त एवं आनन्दमय’ लेख में लौकिक जीवन के अंतिम पड़ाव पर चलने वाले वृद्ध भाई-बहनों को, आत्म-अभिमानी बन परमपिता परमात्मा शिवबाबा की याद में रह, जीवन जीने की सहज प्रेरणा देकर, सर्व का कल्याण करने का मार्ग दिखाया गया है। मेरी लौकिक उम्र 67 वर्ष है और वृद्ध भाई-बहनों को इस लेख को ज्ञानामृत के माध्यम से पढ़वाकर प्रचार-प्रसार करके बाबा की सेवा करता रहता हूँ। वाह रे बाबा, वाह री ज्ञानामृत, धन्यवाद लेखक भाई को।

ब्र.कु. रतन भाई, सिकन्दराराऊ, हाथरस (उ.प्र.)

दिसम्बर, 2017 अंक के ये लेख – ‘परमात्मा का संग बचाता है कुसंग से’, ‘ईर्ष्या की चोट न दें, न खाएँ’, ‘धर्म व अध्यात्म’, ‘सम्पादकीय – न दुरुपयोग, न दमन, केवल सदुपयोग’ सारयुक्त, अनुभवयुक्त, शिक्षाप्रद, आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत और हृदय को गद्‌गद् करने वाले हैं। लेखकगण को ढेर सारी बधाइयाँ।

ब्र.कु. शम्भूप्रसाद शर्मा, सोडाला, जयपुर

रंग दे चुनरिया

ब्रह्माकुमारी वीरबाला
लखनऊ

भारत एक आध्यात्मिक देश है। यहाँ समय प्रति समय अनेकों त्यौहार मनाये जाते हैं। इन त्यौहारों में जहाँ एक ओर चहल-पहल, खाना-पीना, गाना-बजाना आदि मनोरंजन के साधन रहते हैं, वहीं इनका आध्यात्मिक महत्त्व भी रहता है तथा त्यौहारों से सम्बन्धित कथायें भी प्रचलित रहती हैं। भिन्न-भिन्न देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना भी की जाती है। इसी क्रम में पूरे देश को रंगीन फुहारों से सराबोर करने वाला होली उत्सव भी अति विशेष है। त्यौहार तो आता है और चला जाता है परन्तु परमात्म प्यार में रंगी आत्मा अपनी जीवन रूपी चुनरी को आनन्द और स्नेह के पक्के रंग में ऐसा रंग लेती है जो परिस्थितियाँ चाहे जैसी भी हों, प्रभु-प्रेम का यह रंग अमिट रहता है। इसी की याद में भक्तों ने गाया है –

**''श्याम पिया मोरी रंग दे चुनरिया
ऐसी रंग दे, रंग ना छूटे,
धोबी धोये चाहे सारी रे उमरिया।''**

यह चुनरी कोई साधारण कपड़े की नहीं है बल्कि प्रकृति के पाँच तत्वों – जल, अग्नि, पृथ्वी, वायु और आकाश द्वारा निर्मित शरीर रूपी चुनरी है जिसे बिन्दु स्वरूप आत्मा ने धारण कर रखा है। निराकार आत्मा इस शरीर द्वारा ही संसार में अपना पार्ट बजाती है। शरीर के अन्दर स्थित आत्मा गुप्त है, उसे इन आँखों से नहीं देखा जा सकता, अनुभव किया जा सकता है। शरीर में जब तक आत्मा है तब तक जीवन है। आत्मा के अच्छे व बुरे संस्कारों का प्रदर्शन उन कर्मों द्वारा होता है जो वह शरीर में रहकर करती है। कर्मों के आधार पर ही किसी को महात्मा, किसी को पापात्मा, किसी को सदाचारी, किसी को दुराचारी कहा जाता है।

आत्मा ज्योतिबिन्दु स्वरूप है

देह की चुनरी में लिपटी आत्मा का बाह्य जगत से सम्बन्ध इस चुनरी द्वारा ही होता है। जन्म के बाद शरीर को एक नाम मिलता है, सूरत-शक्ल मिलती है, माता-पिता मिलते हैं, इनकी वजह से उसकी स्थूल जगत में पहचान बनती है। आत्मा का रूप ज्योतिबिन्दु स्वरूप है। आत्मा का कोई नाम नहीं है। माया अर्थात् बुराइयों के जीवन में आने से आत्मा मैली हो जाती है। उसका बाह्य व्यक्तित्व धुँधला पड़ जाता है और वह पुकार उठती है –

**''लागा चुनरी में दाग छुड़ाऊँ कैसे,
घर जाऊँ कैसे''**

अनजाने में दाग तो चुनरी में लग जाते हैं परन्तु उनको छुड़ाने की युक्ति नहीं आती। गंगा-स्नान करने या तीर्थयात्रा करने से भी आत्मा पावन नहीं बनती। तब अनुरागी आत्मायें हृदय से परमात्मा को पुकारने लगती हैं। लम्बे समय तक भक्तों की पुकार सुनते-सुनते भगवान को भक्ति का फल देने इस धरा पर अवतरित होना पड़ता है। वे साधारण मानवीय तन का आधार लेते हैं। वे माता के गर्भ से जन्म लेकर शरीर के बन्धन में नहीं बँधते। वे मनुष्य सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ आत्मा श्रीकृष्ण के अन्तिम चौरासिवें जन्म वाले तन में प्रवेश कर भक्तों की मनोकामना पूर्ण करते हैं।

रंग 21 जन्मों तक नहीं छूटता

श्रीकृष्ण को श्यामसुन्दर भी कहा जाता है। श्याम कैसे सुन्दर बनते हैं और सुन्दर कैसे श्याम बन जाते हैं, सृष्टि-चक्र की यह कहानी परमात्मा ही आकर समझाते हैं। कलियुग के अन्त एवं सतयुगी नई सृष्टि की स्थापना के संगम समय पर परमात्मा पिता, प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा गीता ज्ञान देकर दैवीयुग की स्थापना करते हैं। भक्तवत्सल भगवान से मिलने का यह संगमयुग का समय है। भक्तों के अतिरिक्त साधु, सन्त, महात्माओं, धर्म-पिताओं सभी को मुक्ति प्रदान कर झोली भरने का समय भी यही है। साकार लोक में आत्मा और परमात्मा के मंगल मिलन का समय कल्प में एक बार ही होता है। ईश्वरीय ज्ञान एवं सहज राजयोग के रंग से आत्माओं की जीवन-चुनरी को भगवान शिव इस समय ऐसा रंगते हैं जो यह रंग एक जन्म तो क्या, आने वाले 21 जन्मों तक नहीं छूटता। इसी की याद में होली का त्यौहार मनाया जाता है। ❖

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

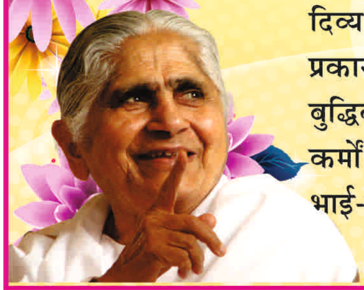

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्न- हमारा चेहरा और चलन कैसी हो?

उत्तर- बाबा से जो पालना, पढ़ाई और प्राप्ति हुई है, उसे देख-देख अपने भाग्य के गीत गाते हैं। अभी हमारा चेहरा और चलन, बोर्ड का काम करे, ऐसी खुशहाल सम्पूर्ण सम्पन्न स्थिति बनानी है। सेवाधारी का काम ही है त्याग, तपस्या। सिर्फ अन्दर में यह न चले कि हम क्या करें? कैसे करें? यह शब्द नहीं बोलो। सहनशक्ति तभी काम करती है जब समेटने और समाने की शक्ति है, बाकी किसी बात के विस्तार में न जाओ। मैं कौन हूँ, मेरा कौन है, यह जो समझ मिली है, इसका जिसे अनुभव है वो भाग्यवान है। जहाँ कदम रखेंगे वहाँ कमाई है। हम प्रभु के प्यारे हैं। दुनिया में चारों तरफ चक्कर लगाके देखो, आप जैसे खुशनसीब कोई नहीं हैं।

प्रश्न- किन चार बातों का परित्याग करने से समय सफल होता रहेगा?

उत्तर- सबके चेहरे मुस्करा रहे हैं। सबजेक्ट 4 हैं ज्ञान, योग, धारणा, सेवा। यह टाइम बहुत वैल्युबुल है। संगठन में बैठकर न्यारे और प्यारे होकर रहना बहुत अच्छा है। जरा भी चिंतन नहीं है। बाबा की याद में बैठने में बहुत सुख मिलता है। कोई बात याद नहीं आती है। व्यक्तिगत किसी को भी आधार नहीं बनाते कि इनके बिगर नहीं चल सकते। एक बाबा के लिये ही दिल कहे, बाबा तेरा शुक्रिया। जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो होगा वह और अच्छा होगा। पहले मैं कहती थी, सुख है तो शान्ति है, शान्ति है तो सुख है लेकिन अभी दिखाई पड़ता है कि सुख-शान्ति तभी हैं जब धीरज है। धीरज धर मनुआ। जो कुछ बाबा करा रहा है, दिल कहता, यही मुझे करना है। मनमत, परमत, पराई और पुरानी बातों को छोड़ दिल और दिमाग से श्रीमत अनुसार ही समय को सफल करना है। जितना हम शान्ति से समय को सफल करते हैं, तो बाबा भी हमको देख खुश, परिवार भी खुश, मैं भी खुश। एक बाबा के सिवाए और कोई नहीं दिखाई पड़ता है। आप सब बाबा के रत्न हो। हमेशा बुद्धि बेहद में रहे जैसे अभी हम सब शान्ति में बैठे हैं, वायब्रेशन कितने पॉवरफुल हैं। मैं समझती हूँ, सारा दिन सेवा करते आप सबके मन, वाणी, कर्म तीनों ही शान्त हैं और शान्ति के व्यवहार से जैसे फरिश्तों की दुनिया हो जाती है। भले कहाँ भी बैठे हैं पर बुद्धि बेहद में है, तो कितनी भी सेवा करते खुशी और सन्तुष्टता बढ़ती रहेगी। यह मेरा घर है, यह मेरा कमरा है, यह मेरा, मेरा .. अब यह बुद्धि में नहीं हो क्योंकि समय थोड़ा है। हम बच्चों का यह बड़ा भाग्य है, समय सफल करना, न फालतू सुनना न सुनाना। संगम पर बाबा ने हर एक को अपना बच्चा बनाया है। जैसे मैं खुश हूँ वैसे तुम भी खुश, इसलिए साक्षी होकर के देखती हूँ।

प्रश्न- पढ़ाई में थकावट क्यों आती है?

उत्तर- अभी दुनिया देख रही है कि यह ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियाँ क्या कर रहे हैं? सारी मुरली ध्यान से पढ़ो, सार क्या है, पढ़ाई क्या है, पढ़ाने वाला कौन है। जब पढ़ाने वाला बुद्धि में आता है तो पढ़ाई को कैच करने की बहुत अच्छी आदत नेचुरल हो जाती है। पढ़ाई क्या है? अभी के

लिये पढ़ाई है पर भविष्य के लिये कमाई है इसलिये पढ़ाई में थकते नहीं हैं, चित्त में भी किसी घड़ी थकावट न आवे। भले कोई भी कारण हो, कोई पुरानी बीमारी अगर फिर से पैदा हो जाती है तो थकावट ले आती है। दिल से शुक्रिया क्यों नहीं निकलता है क्योंकि थकावट है। थकें क्यों? भले अभी देवता नहीं हैं, ब्राह्मण हैं। सतयुग में देवता होंगे लेकिन उस समय भी हमको इतनी खुशी नहीं होगी जितनी आज खुशी है। सतयुग में ऐसा मजा थोड़े ही आयेगा।

जितने डीप जाओ, उतने अच्छे अनुभव होते हैं। अन्दर जाते अनुभव होता है, यह शरीर मुझ मूर्ति (आत्मा) का मन्दिर है। मन्दिर में मूर्ति होती है। मन्दिर में मूर्ति अगर न हो तो उसे मन्दिर नहीं कहा जायेगा। मन्दिर में तो मूर्ति का दर्शन करके ही प्रसन्न हो जाते हैं। अभी हम मन अन्दर मूर्ति बन रहे हैं। शान्ति, प्रेम, सच्चाई के सिवाए और कुछ भी नहीं है। ये कर्मेन्द्रियां सेवा करने के लिये हैं। संगमयुग में बाबा ने यही सिखाया है। ऐसी सेवा जो अभी करते हैं, वह फिर कभी नहीं करेंगे। अभी जो करता है सो पाता है। कर्म तो इस देह द्वारा करना ही है पर कर्म और योग दोनों हों। योग से पुराने विकर्म विनाश हो रहे हैं। बाबा ने अच्छी युक्ति बताई है। जैसा कर्म मैं करूँगी, मुझे देख और करेंगे। मैं दिखाने के लिये नहीं करती हूँ परन्तु कर्म बड़े बलवान हैं, कर्मों से ही प्रैक्टिकल लाइफ में बहुत बल मिला है क्योंकि सर्वशक्तिवान बाप साथ में है। करावनहार करा रहा है, करने वाले का भाग्य है।

प्रश्न- मोह नष्ट है, इसकी निशानी क्या है?

उत्तर- कुछ चाहिए नहीं तब कहेंगे मोह नष्ट है। काम महाशत्रु है इसलिये गृहस्थ में रहते पवित्र रहना है। पवित्रता से योग लग जायेगा। काम नहीं, तो क्रोध भी नहीं। काम महाशत्रु है इसलिये इसे हम जीतेंगे पर जरा-सा भी क्रोध है या कोई एक भी विकार लोभ, मोह है तो पाँचों ही होंगे। आप सभी भाग्यशाली, सौभाग्यशाली हैं जो पाँचों विकारों को जीत लिया, सभी ने जीता है? एक-दो को नहीं देखो। इतनी सब पवित्र आत्मायें, कितनी अच्छी, बाबा को प्यारी लगती हैं। एक-दो को भी प्यारे लगते हैं। चाहे दिन हो, चाहे रात हो, स्वप्न वा संकल्प में अशुद्धि, अपवित्रता नहीं है तो कहेंगे, अच्छा है। और किसी को कुछ मदद न करें लेकिन यह करें। ऐसी पवित्र दृष्टि महासुखकारी होती है। सतयुग में भी ऐसी दृष्टि की लेन-देन नहीं होगी। आपसी सम्बन्धों में अगर मोह भी है तो अन्दर ही अन्दर बड़ा नुकसान हो जाता है। देह के सम्बन्ध में मोहजीत राजा की कहानी अच्छी है। भले काम को जीता परन्तु मोह है, वह भी बाबा को याद करने नहीं देता है। तो हरेक को सच्चा पुरुषार्थ करके अपने आपको मोहजीत रखना है। लोभ भी नहीं, क्या करेंगे, कहाँ रखेंगे इसलिए सिम्पल रहना, एवररेडी बनना। दुनिया में हैं पर न्यारे बहुत हैं इसलिये फ्री हैं। जब से बाबा के बने हैं, बाबा ने अपना बनाके मोहजीत बना दिया है। किसी का, किसी में भी मोह है तो याद का जो बल मिलता है वो मिस है। मोह माया है, थोड़ा भी मोह है तो अपनी तरफ खींचता है इसलिये समझदार भाई-बहनें मोहजीत बनने से बड़े अच्छे सहजयोगी हैं। यहाँ तो एक बाबा के सिवाए किसी को और कुछ याद नहीं आता है। संगमयुग में स्वयं परमात्मा बाप हमारे लिये ब्रह्माबाबा के तन में आकर के अपनी पहचान देता है।

प्रश्न- सर्वशक्तिवान बाबा के साथ बुद्धियोग होने के क्या फायदे मिलते हैं?

उत्तर- सर्व शक्तियों में से भी तीन शक्तियाँ बाबा की याद से फौरन मिलती हैं। एक सहन-शक्ति, दूसरी समाने की शक्ति, तीसरी समेटने की शक्ति। सर्वशक्तिवान बाबा के साथ बुद्धियोग होने से लाइट हो जाते हैं। बाबा ऐसा लाइट बना देता है, ऐसी माइट देता है, फिर सबको देखते हैं तो आत्मायें ही दिखाई देती हैं। कर्म बड़े बलवान हैं। बाबा कहता है, टेंशन नहीं, अटेन्शन रखो। क्या करूँ, कैसे करूँ.. यह नहीं। परमात्मा बाप ने कर्मों की गुह्य गति समझाई है। कर्म के बिगर तो कोई रह नहीं सकता है, कर्म तो करने हैं, पर कौन-से कर्म करने हैं, यह ज्ञान मीठा बाबा देता है। ❖

बाबा का विशेष बच्चा

ब्रह्माकुमारी नेहा खान, लीगल ऑफीसर, सुजलोन एनर्जी लि., नागदा (उज्जैन), म.प्र.

पिछले पाँच वर्षों से मैं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के ईश्वरीय ज्ञान में चल रही हूँ। वर्ष में दो बार मुख्यालय – आबू पर्वत जरूर आती हूँ। ब्रह्माकुमारीज के बारे में मैंने टी.वी.पर 'अवेकनिंग विद ब्रह्माकुमारीज' कार्यक्रम में कुछ प्रवचन सुने थे।

मैं बचपन से ही अपने कैरियर के प्रति बहुत लग्नशील थी। पढ़ाई में हमेशा अव्वल दर्जा प्राप्त किया। लगभग 22 वर्ष की आयु में राष्ट्रीय स्तर पर राइफल शूटिंग में और फिर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जाने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। भारतीय सेना की सेवा में जाने का मेरा बहुत बड़ा सपना था। मुझे याद है जब मैं ए.एफ.सी.ए.टी.(भारतीय वायुसेना की आरम्भिक लिखित परीक्षा) पास करके अपना साक्षात्कार-पत्र नागपुर से लेकर आ रही थी, तभी अचानक फोन पर सूचना मिली कि लौकिक माताजी आई.सी.यू.में हैं, उनकी शुगर का स्तर बहुत बढ़ गया था। बहुत इलाज के बावजूद माताजी ने शरीर छोड़ दिया।

घिर गई अवसाद से

इस घटना से मैं बुरी तरह टूट गई। अगले छह महीनों तक मैं कोई परीक्षा पास नहीं कर सकी। मन कहीं नहीं लग रहा था। मेरे सारे मित्र कहीं न कहीं जॉब करने लगे थे। ऐसी परिस्थिति में मेरे दिमाग ने काम करना बन्द कर दिया और माइग्रेन की बीमारी ने मुझे जकड़ लिया। मेरी स्मृति खोने लगी, मैं किसी को भी पहचानने में अक्षम हो गई। अवसाद से घिर गई। घर के लोग परेशान रहने लगे। मनोचिकित्सक की सलाह भी लेती रही परन्तु जीवन को खत्म करने के अलावा मुझे कोई रास्ता दिख नहीं रहा था। दो वर्ष तक यह सब चलता रहा।

चित्र देखकर शंकित हुई

मेरी एक मित्र की माताजी ब्रह्माकुमारीज में जाती हैं। जब उन्हें मेरे बारे में पता चला तो उन्होंने मेरे परिवार वालों को कहा कि इन्हें वहाँ ले जाइये। मेरी बहन ने ब्रह्माकुमारी आश्रम का पता लगाया और मुझे आश्रम पर भेजना चालू किया। जब वहाँ गई तो निमित्त बहन ने मेरी समस्या पूछी। उस समय मैं शान्त रहती थी, कुछ नहीं बोलती थी। उन्होंने ईश्वरीय ज्ञान का कोर्स करवाना प्रारम्भ किया, मैं सुनने लगी। कोर्स करते-करते जब श्री लक्ष्मी-श्री नारायण आदि देवताओं के चित्र दिखाने लगी तो मुझे लगा, मैं गलत जगह आ गई हूँ क्योंकि मैं मुस्लिम संस्कृति से सम्बन्ध रखती हूँ। फिर मैंने सोचा, यह बहन क्या सोचेगी, कम से कम कोर्स तो पूरा कर लूँ, बाद में देखा जाएगा। मेरे घर के लोग ब्रह्माकुमारीज के ज्ञान से अनभिज्ञ थे, उन्हें बस इतना पता था कि यह मनोचिकित्सा करने वाली और अवसाद से बाहर निकालने में मदद करने वाली संस्था है। वो तो यह संस्था करती ही है परन्तु कई बार चित्र देखने मात्र से हम जाति-धर्म की हदों में आ जाते हैं और असली फायदे से वंचित रह जाते हैं।

हर प्रश्न का उत्तर मिला

मैं भाग्यशाली हूँ, मेरे साथ ऐसा नहीं हुआ। मैं जिस डॉक्टर के पास काउंसलिंग के लिए जाती थी, मैंने उनसे ब्रह्माकुमारी संस्था में जाने की चर्चा की। डॉक्टर साहब कई बार माउन्ट आबू जा चुके थे। उन्होंने कहा, अच्छा है, जाया करो। मैं जाती रही। कुछ दिनों बाद बहनजी की बातों से मुझे लगने लगा कि वे मुझे समझ रही हैं। मुझे बहुत अच्छा लगने लगा। उन्होंने मुझे प्रेरित किया कि आप अपने कैरियर की तरफ ध्यान दें, बजाय जिन्दगी खत्म करने की बात सोचने के। मैं जीवन को लेकर, ज्ञान को लेकर रोज उनसे सवाल पूछती कि यह तो आदि सनातन संस्कृति है, मैं तो मुस्लिम हूँ, घर वाले तो स्वीकार कर लेंगे पर समाज

वालों को जब पता चलेगा कि मैं वहाँ जाती हूँ तो पता नहीं क्या होगा। बहन जी मुझे एक मित्र की तरह समझाती रही और मेरे हर प्रश्न का उत्तर देती रही।

पुनः आया एक परिस्थिति का दबाव

धीरे-धीरे बाबा से मेरा लगाव बढ़ता रहा। मैंने कानून की डिग्री भी पास कर ली। मेरी हालत काफी सुधर गई परन्तु अचानक घर में फिर ऐसी परिस्थिति निर्मित हुई कि मैं नीचे जाने लगी। उस समय यदि निमित्त बहन जी का साथ-सहयोग न होता तो मैं अपने को खत्म कर चुकी होती। उन्होंने मुझे मेरे मन को बाहर नौकरी करने में व्यस्त कर देने की सलाह दी। मैंने जान-पहचान के हाईकोर्ट के एक वकील के पास, निमित्त बहन के प्रोत्साहन से, बहुत कम आय में काम करना स्वीकार कर लिया। बहन ने समझाया, आपका कार्यक्षेत्र यही है, भले ही कम आय मिले परन्तु यह सुअवसर है, एक बार प्रयास अवश्य करके देखो।

नौकरी के लिए मैं इन्दौर गई। वहाँ न्यू पसालिया स्थित ब्रह्माकुमारीज केन्द्र पर मुझे ओमप्रकाश भाई जी मिले। उन्होंने कहा, तुम बाबा की स्पेशल आत्मा हो, रोज सेवाकेन्द्र पर आओ और मुझ से मिलकर जाया करो। उनके द्वारा मुझे मार्गदर्शन और समाधान मिलने लगे।

मेरी सोच से भी ऊँचा बाबा ने पहुँचा दिया

धीरे-धीरे मेरे बॉस को मेरा काम पसन्द आने लगा। एक प्रोजेक्ट में मैंने उनकी मदद की जिससे उनका नुकसान होने से बच गया। उनका विश्वास बढ़ गया और मात्र 4 महीने के अन्दर मुझे हाईकोर्ट में एक एडवोकेट के रूप में अपने साथ काम करने का अवसर दे दिया। इस सम्बन्ध में अपना पहला परिचय-पत्र, जो मेरे वरिष्ठ द्वारा मुझे दिया गया, मैंने ओमप्रकाश भाई को ही दिया। इसके बाद मात्र छह महीनों के अन्दर एक मल्टीनेशनल कंपनी से लीगल पोस्ट के लिए कॉल आया और मेरा चयन हो गया। अब मैं वहाँ लीगल ऑफीसर के रूप में काम कर रही हूँ। जो मैंने सोचा भी नहीं था, वहाँ तक बाबा ने मुझे पहुँचा दिया। यह सब बाबा ही जानते हैं, नहीं तो आज मैं दुनिया में नहीं होती।

मुरली से मिलते हैं प्रश्नों के उत्तर

मेरा परिवार मुझे ब्रह्माकुमारीज में जाने से मना नहीं करता। अन्य कई लोग, जो मुझसे ईश्वरीय ज्ञान के बारे में प्रश्न करते हैं, उनको मैंने कुरान की आयतों के आधार पर ज्ञान समझाना शुरू कर दिया है। वे ज्ञान में आने को उत्सुक भी हुए हैं। पहले मैं माँसाहारी थी पर अब माँसाहार के साथ-साथ प्याज, लहसुन भी पूरी तरह छूट गए हैं। विरोध होता है पर बाबा बैठा है, वो कैसे न कैसे अपने बच्चों को अपनी ओर खींच ही लेता है। बाबा ने आज मुझे डिप्रेशन से पूरी तरह बाहर निकाल दिया है। कार्य की व्यस्तता से मैं प्रतिदिन सेवाकेन्द्र नहीं जा पाती पर जब भी समय मिलता है सप्ताह में 2-3 बार जाती हूँ। मुरली नियमित पढ़ती हूँ, कई प्रश्नों के जवाब बाबा मुझे मुरली के द्वारा दे देते हैं। साथ ही धन, मन और तन से बाबा की सेवा करती हूँ जिसका डबल रिटर्न बाबा कुछ ही दिनों में मुझे लौटा देते हैं और मैं आश्चर्यचकित हो कहती हूँ, ''बाबा यह कैसे?'' वास्तव में बाबा ही हमारे अल्लाह हैं। आमीन (परमात्मा की दुआ)। ओमप्रकाश भाई जी के वो शब्द हमेशा मुझे याद रहते हैं, 'बाबा की तुम स्पेशल आत्मा (बच्चा) हो।'

सृष्टि-ड्रामा का हर दृश्य कल्याणकारी

आज जब पिछली घटनाओं पर नजर दौड़ाती हूँ तो अपने पाठकों प्रति यही सन्देश देना चाहती हूँ कि जीवन में कोई भी परिस्थिति आती है तो उसे स्वीकार करो, अपने मनोबल को टूटने न दो। सृष्टि-ड्रामा का हर दृश्य कल्याणकारी है। माता जी यदि मुझसे ना बिछुड़ गई होती तो मैं आज इतने ऊँचे आध्यात्मिक संगठन से न जुड़ी होती अत: हमारे साथ जो घटित होता है उसमें कल्याण अवश्य छिपा रहता है।

शीतल दीदी के प्रति मैं दिल से आभारी हूँ जिनको प्यारे बाबा ने, जीवन के मुश्किल समय में मुझे उचित मार्गदर्शन देने के निमित्त बनाया। ❖

समय-सारणी के साथ संकल्प-सारणी भी बनाएँ

ब्रह्माकुमारी शिवानी बहन, गुरुग्राम (हरियाणा)

हम अपने दिन की शुरुआत को देखें। हमने अलार्म लगाया था, बजा या स्नूज पर लगा दिया था। हम उठे, तब मन में पहली जो सोच आती है वह यही होती है कि ओ माई गॉड! ये तो देर हो गई। इस एक सोच के कारण हमारी पूरी ऊर्जा का स्तर ही बदल जाता है। अब हम सोचते हैं कि हमारे पास व्यायाम करने के लिए समय नहीं है, अब हमें जल्दी-जल्दी बच्चों को उठाना है। उसके बाद फिर विचारों की एक लम्बी श्रृंखला बन जाती है। इसलिए कहते हैं, आज का दिन अच्छा नहीं बीता, न मालूम सुबह-सुबह किसका चेहरा देखा था। इसमें किसी का चेहरा देखने की कोई बात ही नहीं है बल्कि हमने सुबह-सुबह कौन-सा संकल्प किया था, यह उस पर निर्भर करता है।

अगर हमने एक नकारात्मक संकल्प पैदा किया तो उससे पूरे घर का ऊर्जा का स्तर ही नकारात्मकता से भर जाता है। फिर बच्चों को बिना बात के डांट देना, बच्चों ने भी ऊपर से प्रतिक्रिया कर देना, ये सब जमा होकर नकारात्मक प्रभाव पड़ता जाता है। हमने दिन की शुरुआत ही नकारात्मक सोच से की थी। इससे बचने के लिए, सुबह उठकर सबसे पहले पाँच मिनट अपने साथ बैठें और अपने दिन की शुरुआत बहुत ही अच्छे सकारात्मक संकल्प से करें क्योंकि यह समय सारे दिन की दिनचर्या का आधार है, इसके ऊपर हमारा पूरा दिन निर्भर करता है। जैसे हम दिन की समय-सारणी बनाते हैं, उसी तरह, संकल्प-सारणी बनायें कि हमें किस प्रकार के विचारों के साथ दिन की शुरुआत करनी है। ये करने से हममें जागरूकता आ जाती है कि मैं अपने संकल्प खुद उत्पन्न कर सकती हूँ। फिर हमारा आत्मविश्वास भी बढ़ने लगता है कि मेरे पास शक्ति है यह चुनने की कि मैं किस प्रकार के संकल्प उत्पन्न करूँ।

जब हम सोचते हैं कि देर हो गई, अपने साथ बैठने के लिए पाँच मिनट अब समय नहीं है। इससे क्या होता है कि भले ही पाँच मिनट अपने लिए न निकालें लेकिन बाकी सारे काम तो करेंगे ही लेकिन कैसे करेंगे? तनाव से। तनाव से करते-करते वास्तव में हमें ज्यादा समय लग रहा है। अगर हम दो मिनट भी रुक जाएँ, यदि हमारे पास पाँच मिनट नहीं हैं, एक मिनट तो है, एक मिनट कोई बहुत ज्यादा नहीं होता है। एक मिनट विचार करें, ठीक है, मुझे देर हो गई लेकिन उसका प्रभाव अब मेरे अगले कार्य पर नहीं पड़ेगा। अब परिस्थितियाँ मेरे नियंत्रण में हैं क्योंकि मेरा मन, मेरे नियंत्रण में है। अब मैं स्थिर रहकर अपने दिन की शुरुआत करूँगी, इस सोच को सिर्फ मैं ही उत्पन्न कर सकती हूँ।

अगर आपको विलंब हो जाए तो मैं आपको यह कहती हूँ कि कोई बात नहीं, ओ.के., ठीक है। तो यह बात मैं अपने आपको भी तो कह सकती हूँ। अगर हमने अपने-आपको कह दिया कि अब तो सबकुछ गड़बड़ होने वाला है, तो समझो गड़बड़ हो ही जायेगा क्योंकि विचारों की जो किस्म उत्पन्न होती है, फिर वो श्रृंखला बन जाती है। विशेषकर अगर नकारात्मक सोच वाली किस्म उत्पन्न होती है तो हम उसके प्रति जागरूक नहीं होते हैं। ऐसे संकल्प बहुत तीव्र चलते हैं जैसे कि अब कुछ नहीं होगा, बच्चे उठे हैं कि नहीं, बस तो नहीं आ जायेगी, जल्दी करो ना! इस प्रकार मन में अराजकता की भावना पैदा होती है।

हम सारा दिन देखें कि हमारे संकल्पों की गुणवत्ता क्या है? सारा दिन स्वयं के साथ एक आन्तरिक वार्तालाप ही तो

चल रहा है। 'ये बहुत बुरे हैं, इनको ऐसा नहीं करना चाहिए था। ये बहुत अच्छे हैं, इनके पास जो है, वो मेरे पास नहीं है' – यह क्या हो रहा है अंदर, हम किससे बातें कर रहे हैं? हम सारा दिन अपने मन के साथ ही तो बातें कर रहे हैं। अगर देर भी हो गई तो कोई बात नहीं, इसका प्रभाव मेरे अगले कार्य पर न पड़े, इसके लिए एक मिनट रुककर अन्तर्मन से उपयुक्त वार्तालाप करें। इस प्रकार के वार्तालाप का प्रभाव हमारे सारे दिन पर पड़ता है। इसलिए सुबह उठने के साथ सकारात्मक संकल्प करें और अपने मन को संतुलित रखें। ❖

क्षमा – जीवन का आभूषण

ब्रह्माकुमार शुभ्र, दुर्गापुर (पश्चिम बंगाल)

क्या जीवन-यात्रा में हमने अपने अन्दर असीम प्यार और आनंदमय मिठास भरकर उस व्यक्ति की ओर कभी भरपूर नजरों से देखा है, जिसने सारी जिंदगी हमारा दिल दुखाया हो? हम यह भी चेक करें, उस समय दिल की किसी परत में उसके लिए कतरा भर भी गुस्सा तो नहीं था? अगर हमने ऐसा किया है तो समझिये, जीवन के सबसे बड़े आभूषण को पहन लिया। बहुत मुश्किल होता है किसी को क्षमा कर पाना।

आज की दुनिया में संबंधों में मधुरता न होने का एकमात्र कारण है एक-दूसरे के प्रति क्षमाभाव न होना। हम सच्चा प्यार तभी कर सकते हैं जब दूसरे की गलतियों को तूल न देकर, दिल पर उन्हें रखे बिना, उसको माफ करें। इससे भी आगे, उस व्यक्ति के प्रति शुभभावना रखकर, उसकी अच्छाई देखें, अच्छे कर्म के लिए प्रेरणा दें एवं उसके सच्चे सहयोगी बनें, इसको ही सच्चा प्यार कहा जाता है। महात्मा गाँधी जी ने कहा है, ''बिना क्षमा के प्रेम नहीं है।'' आपसी संबंधों को खूबसूरत बनाने का यही एकमात्र उपाय है।

क्षमाशील व्यक्ति सहनशील होने के कारण सदा विजयी होता है। वास्तव में ईर्ष्या और द्वेष की भावना अज्ञानता का लक्षण है। इससे हम दूसरों को तो शायद ही दुख दे पाते हैं परन्तु स्वयं अवश्य दुखी होते हैं। यदि कोई व्यक्ति उन्माद के वशीभूत होकर अपने शरीर का अंग काटने लगे तो देखने वाला उस पर दया करके, उसे बचाने की कोशिश करेगा, ना कि उसका अनुकरण करके अपना भी अंग काटने लगेगा। इसी प्रकार, आत्म-अभिमानी तथा क्षमाशील व्यक्ति का हृदय क्रोधी, विकारी और अपकारी के प्रति करुणा तथा क्षमा से भर जाता है, वह उसे सही दिशा की ओर ले जाने की कोशिश करता है। हमें याद रखना चाहिए कि क्षमा से बढ़कर संसार में और कोई तप नहीं है तथा अपकारी पर उपकार करना ही सच्चा देवत्व है।

परमात्मा क्षमा के सागर हैं

भक्त मंदिरों में जाकर भगवान से प्रार्थना करते हैं कि, ''हे भगवान, हमारे पापों को क्षमा कर दो।'' वे यह नहीं समझते हैं कि क्षमा का गुण उनके भीतर ही है। जब तक हम मनुष्य स्वयं क्षमाशील नहीं बनेंगे, अपने क्षमा के गुण को जागृत नहीं करेंगे, दूसरों के पाप कर्मों को क्षमा नहीं करेंगे तब तक भगवान भी क्षमा कर नहीं पाते। नि:सन्देह परमात्मा क्षमा के सागर हैं लेकिन उनकी क्षमा के अधिकारी भी वही हो सकते हैं जो स्वयं क्षमाशील हों।

क्षमा करने का अर्थ किसी भी मायने में कायरता नहीं है। क्षमा वही व्यक्ति कर सकता है जो समर्थ हो, सक्षम हो, आत्म-अभिमानी हो और शक्तिशाली हो। ईश्वर की चाहना यही है कि उसके बच्चे आपस में मिल-जुलकर सुख से रहें, शान्ति और समरसता का विकास करें। क्या हम परमात्मा की अपेक्षाओं पर खरे उतरे? इस पर पुनर्विचार का समय अब आ गया है। आइए, हम सभी क्षमा के गुण को अपने में भरकर, अपने स्रष्टा से वायदा करें कि किसी के प्रति भी, कोई भी द्वेष नहीं रखेंगे, क्षमा करेंगे। ❖

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष..

सहधर्मिणी

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

कन्या की जब शादी हो जाती है तो वह पति की सहधर्मिणी कहलाती है। सहधर्मिणी का अर्थ है धर्म के कार्यों में साथी या धर्म के कार्यों में भागीदार। इसीलिए भारतीय यादगार शास्त्रों में यह विधान लिखित है कि कोई भी धार्मिक अनुष्ठान पत्नी की उपस्थिति के बिना पूर्ण नहीं हो सकता। यज्ञ, दान, कथा आदि सभी में सहधर्मिणी का भाग लेना अनिवार्य है।

भागीदारी केवल धर्म के कार्यों में

इसी के साथ इस विधान का भी वर्णन है कि पति यदि कोई भी उत्तम कार्य करता है, भले ही पत्नी से छिपाकर, उसकी अनुपस्थिति में करे या प्रदेश में करे तो भी उस उत्तम कार्य का आधा पुण्य सहधर्मिणी को मिलेगा ही मिलेगा। स्वत: चलित प्रक्रिया के तहत उस पुण्य का आधा भाग पत्नी के खाते में आ जाएगा। इसी के साथ यह बात भी जुड़ी हुई है कि यदि पति कोई पाप का काम करता है तो पत्नी उस पाप कर्म में या उसके फल में भागीदार नहीं है क्योंकि वह सहधर्मिणी है, सहपापिनी नहीं। जैसे, यदि कोई व्यक्ति डॉक्टर है तो उसकी पत्नी बिना पढ़े भी डॉक्टरनी कहलाती है, कोई मास्टर है तो उसकी पत्नी को भी लोग मास्टरनी कहकर पुकारते हैं परन्तु यदि कोई पति चोरी कर लेता है तो उसकी पत्नी चोरनी नहीं कहलाती। कोई हत्या कर दे तो उसकी पत्नी हत्यारिनी नहीं कहलाती। यदि पति को ऊँचा ओहदा मिल जाए तो विशेष अवसरों पर पत्नी, बाजू में बैठने और पति के समान सम्मान पाने की हकदार बनती है। यदि कोई मन्त्री बन जाए, मुख्यमन्त्री, प्रधानमन्त्री, राष्ट्रपति, राजदूत आदि का पद प्राप्त कर ले तो उसकी पत्नी को भी, उसी अनुसार सम्मान मिले, यह सामाजिक व्यवस्था है परन्तु यदि कोई अपराधवश जेल चला जाए तो पत्नी को भी जेल में जाना पड़े, यह विधान नहीं है। किसी को फाँसी की सजा हो जाए तो पत्नी भी उसी सजा को भोगे, यह विधान-सम्मत नहीं है। इसका कारण यही है कि सहधर्मिणी धर्म के कार्यों में, श्रेष्ठ कार्यों में, पुण्य के कार्यों में भागीदार है, पाप के कार्यों में नहीं।

अपने पुरुषार्थ से प्राप्त हर पुण्य की सम्पूर्ण भागीदार नारी

दूसरी तरफ, यदि पत्नी पढ़ी-लिखी है, मास्टरनी है तो उसके पति को कोई मास्टर नहीं कहता, पत्नी डॉक्टरनी है तो पति को कोई डॉक्टर नहीं कहता क्योंकि पति न तो सहधर्मी कहा गया है और न ही अर्द्धांगना इसलिए अपने पुरुषार्थ से प्राप्त हर पुण्य की सम्पूर्ण भागीदार नारी स्वयं है। हाँ, यदि पति की कमाई से वह दान-पुण्य करती है तो उसका हिस्सा पति को मिलता अवश्य है। जिन सामाजिक, आध्यात्मिक, धार्मिक कार्यों में पति का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष योगदान पत्नी को होता है, उनमें भी उसे योगदान अनुसार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हिस्सा जरूर मिलता है।

बैटर हाफ

अंग्रेजी में पत्नी को 'बैटर हाफ' कहा गया है। इसका अर्थ है कि वह पति की अर्धांगिनी तो है परंतु उसमें भी श्रेष्ठतर अंग है, तुलनात्मक रीति से उच्चतर है। परन्तु यह कहने मात्र है, व्यवहार में कुछ दूसरा ही दृश्य परिलक्षित होता है जिसके बारे में एक कार्यक्रम में उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति भ्राता ए.के.सीकरी जी की टिप्पणी उल्लेखनीय है। 'सत्यभक्त भावना' के मार्च, 2017 के अंक में प्रकाशित हुआ है कि उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता ए.के.सीकरी ने 'री-प्रोडक्टिव

राइट्स इन इंडियन कोर्ट्स' विषय पर नई दिल्ली की एक यूनिवर्सिटी में आयोजित संगोष्ठी में बोलते हुए कहा, ''हमारे यहाँ महिलाओं को बैटर हाफ कहा जाता है। लेकिन ऐसा सिर्फ कहने के लिए है, क्योंकि मानने वाले तो बहुत कम हैं। ज्यादातर पुरुष तो पत्नी को बैटर हॉफ का टैग भी नहीं देते। ऐसे लोगों से मेरी एक ही अपील है, पत्नी को बैटर हाफ नहीं बना सकते, कम से कम उसे इक्वल हाफ तो बनाइए। उसे उसके अधिकार तो दीजिए।''

समाज की मानसिकता पर निराशा जताते हुए जस्टिस सीकरी ने कहा, ''अपने देश में अगर री-प्रोडक्टिव राइट्स की बात करें, तो एक ही नजारा दिखता है। यहाँ महिलाओं के री-प्रोडक्टिव राइट्स से जुड़े फैसले में उनसे ही नहीं पूछा जाता। ये अधिकार सिर्फ महिलाओं का है लेकिन इसके फैसले सिर्फ पुरुष या उसका परिवार करता है। मुझे हैरानी है कि ये 21वीं सदी है। हम टेक्नोलॉजी में एडवांस हो रहे हैं। लगातार स्पेस में जा रहे हैं लेकिन महिलाओं के साथ इंसानियत नहीं बरत पा रहे हैं। ये हमारे समाज का कड़वा सच है। इसके पीछे पुरुषों की वह मानसिकता है जो हमेशा महिलाओं पर अपना वर्चस्व रखना चाहती है। ये हमारे समाज की जड़ों में बसी है, जिसे जल्द से जल्द पूरी तरह उखाड़ फेंकने की जरूरत है।''

न्यायमूर्ति सीकरी ने प्रसिद्ध नॉवेल 'एक चादर मैली-सी' का उदाहरण देते हुए कहा, ''जन्म से लेकर मृत्यु तक कभी महिला के शरीर पर कोई और हक नहीं जता सकता। कहीं भी ऐसा हो रहा है, तो वे ये न कहें कि हमारे यहाँ महिलाएँ स्वतंत्र हैं क्योंकि कोई महिला तब तक स्वतंत्र नहीं कही जा सकती जब तक उसके शरीर पर सिर्फ उसका अधिकार न हो।''

''बेबस महसूस करता हूँ, कानून तो बन जाते हैं, लोगों की सोच कैसे बदलूँ।'' महिलाओं के प्रति समाज की सोच को लेकर जस्टिस सीकरी ने कहा, ''मुझे बेबसी महसूस होती है। कुरीतियाँ दूर करने के लिए कई बार कानून बनते तो हैं लेकिन ऐसा हो नहीं पाता क्योंकि समाज के अपने नियम-कानून ऐसा होने नहीं देते। कोर्ट में आने वाले मसलों को तो हम सुलझा देते हैं लेकिन लोगों की सोच कैसे बदलें।''

विलुप्त हो रहा है माता रूप

नारी जगजननी है। पत्नी वह केवल पुरुष की बनती है परन्तु जननी (माँ) स्त्री और पुरुष दोनों की बनती है। विवाह, माता बनने के लिए किया जाता है, भोग्या बनने के लिए नहीं। वंशवृद्धि के लिए पिता कन्यादान करता है और वंशवृद्धि के लिए वरपक्ष कन्यादान स्वीकार करता है परन्तु आज नारी का माता रूप विलुप्त होता जा रहा है। वह मात्र चमड़ा और चीज में परिवर्तित होती जा रही है। वर्तमान प्रचार-प्रसार के हथकण्डों द्वारा स्त्रियों में लज्जा, शील, सतीत्व, सच्चरित्रता, निरोगता, सदाचरण आदि का नाश हो रहा है। बस उसका एक ही रूप सर्वव्यापक हो रहा है कि उसके शरीर के हाड-माँस-चाम सब भोग के लिए हैं लेकिन नारी की ऐसी इमेज बनाकर हम आने वाली पीढ़ी को सिवाय भोग और रोग के अन्य क्या विरासत दे पाएँगे?

अध्यात्म रूप है सत्य और सनातन

अध्यात्म कहता है, हाड-माँस-चाम का आवरण, नर और नारी दोनों का समान तत्वों से बना है। इस आवरण के नीचे शुद्ध, बुद्ध आत्मिक रूप छिपा है, जो सत्य और सनातन है। शास्त्र कहता है, इदं शरीरं कृमिजाल संयुतं, स्वभाव दुर्गन्धिमशौचमध्रुवम्। रुजायुतं मूत्र पुरीषभाजनं रमन्ति मूढ़ा न रमन्ति पण्डिता:।। भावार्थ है, यह शरीर (नर या नारी) कीड़ों के समुदाय से युक्त स्वाभाविक ही दुर्गन्धिपूर्ण, अपवित्र और नश्वर है; रोगों से युक्त मल-मूत्र का बर्तन है। इसमें राग (आसक्ति) मूढ़ (अज्ञानी) लोग करते हैं, विद्वान नहीं। आगे कहा है, इस शरीर रूपी घर में हड्डियों के बाँस और खम्भे हैं। खाल, रोमराजि और नखों से आच्छादित इसके नौ द्वारों से मल, मूत्र बहता रहता है। और आगे कहा है, ज्ञानवान पुरुष को चाहिए कि वह

मृत्युरूप जानकर, भोग की इच्छा से स्त्री शरीर वाली आत्मा के समीप न जाए। उसी प्रकार स्त्री को भी चाहिए कि वह मृत्युरूप समझकर, भोग की इच्छा से पुरुष शरीर वाली आत्मा के समीप न जाए। उपरोक्त चर्चा का सार यही है कि नर या नारी, दोनों में से किसी के साथ भी मात्र उसे देह मानकर व्यवहार करना, विनाश को निमन्त्रण देना है।

धकेली गई अमावस्या की ओर

आज से 2500 वर्ष पहले अर्थात् द्वापर युग में नारी के शोषण के जो विभिन्न तरीके निकले, उनकी अनुगूँज आज तक भी कहीं-कहीं सुनाई पड़ रही है। शिक्षा से वंचित करके, पर्दानशीन बनाकर उसे अमावस्या की ओर धकेल दिया गया। लेकिन यह भी ध्यान में रहे, स्वतन्त्रता के नाम पर स्वच्छन्दता देने वाला, भोग द्वारा पल-पल उसका शोषण करने वाला आधुनिक समाज उसे अभी पूर्णमासी नहीं दे पाया है। स्वच्छन्द भोगों के बदबूदार माहौल में पलने वाला उसका शीशु किसी भयानक अनहोनी का घन्टा बजा रहा है।

पूर्णमासी का आगाज

पूर्णमासी का आगाज तभी होगा जब नारी को शरीर के आवरण में छिपी हीरे-तुल्य चमकदार आत्मा समझकर, उसके साथ समानता का व्यवहार किया जाएगा। उसकी मांसलता को नहीं, बौद्धिकता को देखा जाएगा। वह भोगेश्वरी से योगेश्वरी के पद पर विराजमान होगी। वह शरीरभान से आत्मभान की ओर बढ़ेगी। घर-गृहस्थ वासना के केन्द्र नहीं, साधना के शिखर बनेंगे। स्वयं नारी की भी यही पुकार है –

केवल नारी नहीं, सुनो हम साथी हैं, भगिनी, माँ हैं।
नहीं वासना का साधन हैं, हम ममता हैं, गरिमा हैं।
मस्तक पर सिंदूर बिंदु, अनुराग, त्याग की सीमा हैं।
आँचल में जीवनधारा है, कर में आतुर राखी हैं।
हैं गृहिणी, सहधर्मचारिणी, कुल दीपक की बाती हैं।
जब तक नारी के नयनों से बहता है जल खारा।
तब तक नवयुग का न पूर्ण होगा मृदु स्वप्न तुम्हारा।।

❖

पृष्ठ 25 का शेष

फैसला लिखिएगा। भगवान कहते हैं, बच्चे, यदि तुम मेरा ध्यान करोगे तो मैं तुम्हारा ध्यान रखूँगा। ''मेरा बाबा, मैं बाबा का'', यह महामंत्र सभी कामना पूर्ण करता है। मैं 12 अप्रैल, 2017 को बाबा को साथ लेकर रीवा कोर्ट गया। बाबू को एक 'ओमशान्ति मीडिया' दिया और पूछा, मेरा फैसला हो गया? बोला हाँ, आपके पक्ष में हो गया। यह सुनकर मेरे मुख से निकला 'वाह बाबा वाह!' मुझे ऐसा लगता है कि शिव बाबा ने कमिश्नर को प्रेरित कर सच के पक्ष में स्वयं फैसला लिखा है। मेरे दोनों मामले सत्य थे, जिनमें मेरी विजय हुई। बाबा कहते हैं, बच्चे, तुम चिंता मत करो, मैं बैठा हूँ। नकल बाबू को भी एक ज्ञानामृत पत्रिका व ईश्वर का परिचय दिया।

अन्त में जीत सत्य की

कहा गया है, सत्य की नाव हिलेगी-डुलेगी लेकिन डूबेगी नहीं। तहसील व एस.डी.ओ.कोर्ट से मैं हार गया लेकिन कमिश्नर कोर्ट से जीत गया। इसका अर्थ है, सत्य की नाव हिली-डुली लेकिन डूबी नहीं। सत्य के पीछे मनुष्य को समय का इंतजार करना पड़ता है, कोर्ट जाने-आने में पैसे खर्च होते हैं और परेशानी भी होती है लेकिन अंत में सत्य की ही विजय होती है।

मैं 22 अप्रैल, 2017 को फैसले की नकल लेकर चलने लगा तो बाबू को एक ज्ञानामृत दी और कहा कि आपने मेरी बहुत मदद की है। तब उसने कहा, मैंने आपकी कोई मदद नहीं की, आपकी मदद ईश्वर ने की है, जिसकी आप सेवा कर रहे हैं। तभी बाबा का यह स्लोगन याद आया कि हिम्मते बच्चे मददे बाप अर्थात् भगवान कहते हैं कि बच्चे हिम्मत का एक कदम आगे बढ़ाओ तो मैं तुम्हारी हजार गुणा मदद करूँगा। कमिश्नर कोर्ट, रीवा में मुझे किसी भी कर्मचारी को पैसा नहीं देना पड़ा। शिवबाबा की मदद से मेरे सभी कार्य फ्री में हो गये और मैं मामला भी जीत गया। ❖

सोवत है, सो खोवत है...

ब्रह्माकुमार दिनेश, हाथरस (आनन्दपुरी कालोनी), उत्तर प्रदेश

बुजुर्ग लोग प्राय: बताते रहे हैं कि मनुष्य की श्वासें निश्चित हैं और जो जितनी जल्दी-जल्दी श्वास गँवाते हैं वे उतने ही जल्दी संसार से विदा हो जाते हैं। कुछ ऐसा आकलन माना जाता है जिसकी यह कहावत है, ''बैठत 12, चलत 18, सोवत 32, मथत 64, यौं भाखै जगदीश'' अर्थात् स्वस्थ और सामान्य अवस्था में बैठे हुए 12 श्वासें, चलने में 18, सोने में 32 तथा काम विकार के वशीभूत होने पर 64 श्वासें प्रति मिनट जीवन से सिमट जाती हैं। आज संसार में काम विकार का जोर है और नादान मानव इस विकार के वशीभूत होकर अपने जीवन को भस्मीभूत करने में लगा हुआ है। सोने में मनुष्य 32 श्वासें प्रति मिनट गँवा रहे हैं। स्वस्थ जीवन के लिए पूर्ण नींद का आना आवश्यक है परन्तु यूँ ही आलस्य, प्रमाद के वशीभूत होकर लेटे रहना, सोते रहना तो अपने जीवन की घड़ियों को खत्म करना ही है।

अधिक सोने व अधिक खाने से आयु क्षीण होती है

हाँलाकि मृत्यु किसी न किसी विधि और बहाने से समय पर ही आती है लेकिन ऐसा वैज्ञानिक विश्लेषण है कि अधिक सोने वाले व अधिक खाने वाले जल्दी ही इस शरीर रूपी वस्त्र को छोड़ देते हैं। स्वस्थ शरीर को आराम करने के लिए अधिकतम 6 घण्टे चाहिएँ। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संस्थापक पिताश्री ब्रह्मा बाबा कब सोते थे और कब जागते थे, यह प्राय: मालूम ही नहीं पड़ता था। ब्रह्ममुहूर्त में 2 बजे जागते हुए उन्हें ब्रह्मावत्सों ने 93 वर्ष की उम्र में भी देखा। आध्यात्मिक ऊर्जा से भरपूर अपनी जीवनचर्या से सर्व को शिक्षा देने की सतत प्रक्रिया अन्त समय तक रही। श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है, ''या निशा सर्वभूतानां, तस्यां जागर्ति संयमी'' अर्थात् जिस रात्रि में सारा संसार सोया पड़ा रहता है उस रात्रि में संयमी अर्थात् योगी जागरण करते हैं। वासनाओं से भरे हुए जीवन से बीमारियों और तनाव की दुर्गन्ध आया करती है। धन बहुत इकट्ठा हो सकता है लेकिन उसे कमाकर जो स्टेटस बनाया है, उसे लगातार जारी रखने के लिए उत्पन्न तनावों से भरा जीवन, आयु को क्षीण कर रहा है।

अर्द्ध चैतन्य निद्रा

अर्द्धरात्रि या उसके बाद तक योगी अपनी निद्रा पूरी कर चुका होता है। जब सामान्यजन सोते हैं उस ब्रह्ममुहूर्त में योगीजन जागरण करके प्रभु मिलन की गोदी का सुख लेते हैं। यही आत्म-चिन्तन और परमात्म मिलन की सुखद घड़ियाँ होती हैं। वे जागरण करते हैं इसका अर्थ यह नहीं कि वे सोते ही नहीं हैं – लेकिन उनका सोना 'अर्द्ध चैतन्य निद्रा' की तरह है जो जरा-सी आहट पर जाग जाते हैं। कम नींद और अच्छी गहरी नींद ही उनकी शारीरिक और मानसिक थकावट को दूर कर देती है। एक सामान्यजन और संयमित योगीजन के सोने और खाने में रात-दिन का अन्तर है।

एक बार साबरमती आश्रम में ब्रह्ममुहूर्त की प्रार्थना में एक आश्रमवासी उपस्थित नहीं हुआ तो उसी अनुपस्थिति को देखकर गांधी जी ने कहा था कि यह लक्षण ठीक नहीं है। यह तो हुई एक ऐसे व्यक्तित्व की बात जिसने देश को विदेशी राज्य से आजाद कराने का संकल्प लिया था। अब तो सारा संसार ही विकारों के वशीभूत है। इसे निर्विकारी बनाने वालों को तो ब्रह्ममुहूर्त में जागकर अवश्य अपनी शक्तियों को उन्नत करना ही चाहिए।

राजयोग से आयु में वृद्धि

शिव बाबा के महावाक्य हैं, ''बच्चे, जितना-जितना तुम योग में रहेंगे, तुम्हारी आयु बढ़ती जायेगी और तुम निरोगी बन जायेंगे। सोना और खाना यह कोई जीवन नहीं।

शेष पृष्ठ 20 पर

परमात्म शक्ति की कमाल
जीवन बना खुशहाल

ब्रह्माकुमार रामदास देशमुख, रावलगाँव (मालेगाँव कैम्प), महाराष्ट्र

मैं ईश्वरीय ज्ञानमार्ग पर पिछले छह साल से चल रहा हूँ। ज्ञान में आने के पहले मेरा स्वभाव अति क्रोधी था। परिवार में सभी भाई-बहनों में सबसे छोटा होने के कारण अति लाडकोड से मेरा स्वभाव जिद्दी भी बन गया था। बचपन से तामसिक आहार खाता था। रोज व्यायामशाला जाना, कुश्ती खेलना मेरी आदत थी। कुश्ती में बहुत पारंगत था। पूना यूनिवर्सिटी से सन् 1989 में 62 कि.ग्रा.में चैम्पीयनशिप मुझे प्राप्त हुई।

मारामारी और दादागिरी

अपनी शारीरिक ताकत को मैं मारामारी और दादागिरी में प्रयोग करता था। इस प्रयोग में सामने वाला मरेगा या जिंदा रहेगा, मुझे न फिक्र और न ही डर था। किसी का खून निकाले बिना चैन नहीं पड़ता था। मेरे पाँव रखते ही स्कूल-कॉलेज में सभी काँपने लगते थे।

घर में अशान्ति और तनाव

मेरे इस स्वभाव के कारण मेरे बड़े भाई ने मुझे दूसरे शहर में पढ़ने के लिए भेज दिया। मैं कराड़ से सातारा आ गया। उसके दो साल बाद पिता जी ने शरीर छोड़ दिया, फिर तो मैं और भी बिगड़ गया। बड़े भाई ने बहुत मेहनत करके एम.एससी.तक मुझे पढ़ाया। इससे नासिक जिले में रावलगाँव शुगर फैक्टरी में मुझे नौकरी मिल गई (वर्तमान समय इस फैक्टरी में मैनेजर के पद पर कार्यरत हूँ)। उसके बाद मेरी शादी हुई। सौभाग्य से बहुत अच्छी पत्नी मिली जो बहुत सुसंस्कारी, शांत और सहनशील है। दो बच्चे भी हो गए। इसके बाद लौकिक माता जी ने शरीर छोड़ा और मैं गुटखा, तंबाकू, शराब आदि के अधिकाधिक अधीन होता चला गया। व्यसनों के कारण मेरी कमाई का बहुत पैसा बरबाद हो रहा था। धन की कमी के कारण घर में भी अशान्ति, तनाव का वातावरण बनने लगा। सिर्फ रात को शराब पीने वाला मैं, अब समय के बंधन को तोड़कर किसी भी समय शराब पीने लगा।

हे भगवान, क्रोध शांत कर दो

डॉक्टर्स ने मुझे गुटखा खाना बंद करने की अनेक बार चेतावनी दी लेकिन कुछ नहीं हुआ। घर में बच्चे, पत्नी सदा दबाव में जी रहे थे। कभी-कभी रात को शराब पीकर आने के बाद भोजन के लिए परोसी गई थाली सीधी दीवार पर फेंक देता था। मेरा 9 साल का बच्चा सदा डरता था कि कहीं ये मुझे मारेंगे, कुछ कर तो नहीं देंगे और वो भगवान से प्रार्थना करता था कि हे भगवान, मेरे पिताजी का क्रोध शांत कर दो।

ऐसा ज्ञान कभी नहीं सुना

सचमुच 23.12.2011 को शिवबाबा की असीम कृपा मुझ पर हुई। अचानक मेरे 9 साल के बच्चे को बहुत तेज बुखार हुआ और मैं अपने फैमिली डॉक्टर को बुलाने गया लेकिन डॉक्टर, रावलगाँव में ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित सात दिन के कोर्स के कार्यक्रम में गए हुए थे। मैं भी उन्हें बुलाने उस कार्यक्रम में चला गया। वहाँ मालेगाँव से ब्रह्माकुमारी बहनें आयी थीं और आत्मा, परमात्मा का सत्य परिचय दे रही थीं। मैं ज्ञान सुनने लगा और मन ही मन सोचने लगा कि मैंने एम.एससी.तक पढ़ाई की लेकिन ऐसा ज्ञान तो कभी भी नहीं सुना। कल से मैं भी नियमित कोर्स के लिए आऊँगा। ऐसा संकल्प मन में करके फिर मैं डॉक्टर को लेकर अपने घर गया। कमाल का जादू था, घर पहुँचते ही देखा, बच्चे का बुखार गायब हो चुका था।

फेंकी गुटखे की पुड़ियाँ

ईश्वरीय ज्ञान का कोर्स मेरा चालू रहा और 01.01.2012 को मैं पहली बाहर मालेगाँव सेवाकेन्द्र पर गया तो वहाँ के शांत, पवित्र वातावरण और बहनों के स्नेहपूर्ण व्यवहार ने मुझ पर अमिट छाप लगा दी। मुझे महसूस हुआ कि इतने पवित्र स्थान पर मुझ जैसा व्यक्ति, जो इतना व्यसनी और शराबी है, खड़ा रहने के लायक भी नहीं है। उस समय मेरी जेब में 8-10 गुटखे की पुड़ियाँ थीं। सेवाकेन्द्र के बाहर आने के बाद मैंने सब पुड़ियाँ फेंक दी और कभी भी न खाने का संकल्प दृढ़ किया। पिछले छह साल से मैंने तो गुटखा खाना छोड़ा ही, गुटखा खाने वालों से बात भी नहीं करता हूँ।

आसुरी-वृत्ति से देव-वृत्ति में परिवर्तन

कोर्स पूरा होने के बाद रावलगाँव में ब्रह्माकुमारीज पाठशाला शुरू हुई। हम प्रतिदिन बाबा की मुरली सुनने लगे और मुरली के एक-एक महावाक्य से जीवन जीने का सच्चा अर्थ और रास्ता मिलता गया। उसके बाद 2012 में ज्ञानसरोवर में ग्राम विकास प्रभाग के कार्यक्रम में बहनजी ने हमको भेजा। हम पूरे परिवार सहित वहाँ पहुँचे। उस भूमि पर पाँव रखते ही सच्ची शांति का, पवित्रता का अनुभव हुआ। चार दिन के कार्यक्रम में मन का बेहद परिवर्तन हुआ। वहाँ की स्वच्छता, अनुशासन, स्नेह, शान्ति ने दिल और दिमाग पर गहरी छाप लगा दी। पांडव भवन में जाते ही एक अदृश्य शक्ति के साथ का निरंतर अनुभव हुआ। वहाँ ही बाबा से दृढ़ संकल्प किया कि मैं अब सब गलत आदतों का दान देकर ही जाऊँगा और माँस, शराब, तंबाकू, गुटखा, प्याज, लहसुन – सब धक से छोड़ दिये। यह परमात्म शक्ति की कमाल है, मुझ जैसे आसुरी वृत्ति वाले को शिवबाबा ने देवता जैसा बना दिया।

यह बाबा का जादू है

मेरे जीवन के परिवर्तन को देखकर लौकिक सम्बन्धी मेरी पत्नी को कहते हैं कि आपने इन पर क्या जादू किया है? लेकिन यह तो बाबा का ही जादू है जो असंभव, संभव हो गया। अब तो योगी और पवित्र जीवन ही अच्छा लगता है और यही सोचता हूँ कि जैसे मेरा जीवन बदल गया वैसे ही सबका बदल जाए इसलिए ज्यादा से ज्यादा भाई-बहनों को मैं और मेरी युगल बाबा का परिचय देते हैं। आज रावलगाँव में तीन स्थानों पर गीता पाठशाला चलाने के निमित्त बाबा ने बनाया है। बहुत खुशी होती है कि बाबा ने इतनी अच्छी ईश्वरीय सेवा के लिए मुझे चुना। अब तो हर पल दिल गाता है –

बाबा आपने कमाल कर दिया।
हमारा सारा जीवन आपने खुशहाल कर दिया।।

❖

पृष्ठ 18 का शेष

योगी बच्चों की नींद, सांसारिक लोगों से आधी होनी चाहिए।'' निर्विकारी जीवन, ब्रह्मचारी जीवन से ओज और तेज में वृद्धि होती है। योगी जीवन और संतुलित जीवन से रोग, शोक, भय, दुख जीवन से निकल जाते हैं। कहा जाता है, श्वास गिनती के हैं। जितना योग करेंगे उतनी ही श्वासों की गति और संख्या कम होती जाएगी, इससे आयु बढ़ेगी ही। आत्मा स्वच्छ तो शरीर भी स्वच्छ और स्वस्थ बनेगा अर्थात् आयु में वृद्धि होना स्वाभाविक है।

अर्जुन को गुडाकेश अर्थात् निद्रा को जीतने वाला कहकर सम्बोधित किया जाता है। संसार रूपी कुरूक्षेत्र में धर्म के मार्ग पर चलते हुए, विकारों को परास्त करके विजयश्री प्राप्त करने के लिए साधक का नींद के ऊपर नियंत्रण आवश्यक है।

अत: हे गुडाकेश! कलियुग के अन्तिम चरण और (सतयुग) के आरम्भिक चरण के सुहावने कल्याणकारी संगम युग के हीरे तुल्य जीवन को कोई खाने में, कोई कौड़ियों को कमाने में, कोई सोने में गुजार दे तो क्या कहा जाए। आइये, इस कल्याणकारी संगमयुग रूपी ब्रह्ममुहूर्त के समय को सफल करते चलें। ❖

हमारे भाग्य की कलम
किसके हाथ में?

ब्रह्माकुमार सत्यम, रादौर (हरियाणा)

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में जाकर मैंने अच्छी रीति से, दिल से इस बात को स्वीकार किया है कि मैं अपने भाग्य का निर्माता स्वयं हूँ। यह बात नई नहीं है परन्तु होता क्या है कि हम जानते हैं पर वास्तविक जीवन में स्वीकार नहीं कर पाते हैं। आज भी मैं अपने बहुत से मित्रों, प्रियजनों को यह कहते हुए सुनता हूँ कि मेरा तो भाग्य ही अच्छा नहीं है...... न जाने ईश्वर ने मेरे ही भाग्य में ऐसा क्यों लिखा...... सारे दुख मेरे ही भाग्य में हैं आदि-आदि। मुझे यह सुनना अच्छा नहीं लगता क्योंकि हम जाने-अनजाने अपने परमपिता परमात्मा को दोष कैसे दे सकते हैं? एक तरफ तो हम परमात्मा को कहते हैं, वह दुखहर्त्ता-सुखकर्त्ता है अर्थात् सभी दुखों से छुड़ाने वाला है फिर दूसरी तरफ अपने दुखों के लिए हम उन्हें जिम्मेवार ठहराते हैं।

वास्तव में दुख-सुख तो हमारे अपने ही कर्मों का परिणाम होता है। जैसा हम कर्म रूपी बीज डालते हैं वैसा ही फल हमको मिलता है। हम परमात्मा के लिए कहते हैं, हे परमपिता, ओ गॉडफादर..... अर्थात् वो हम सबका पिता है और अगर उन्हें हमारा भाग्य लिखना होगा तो चूँकि वो हमारे पिता हैं तो वो सबका एक जैसा और बहुत सुन्दर ही भाग्य लिखेंगे न! जैसे किसी भी माता-पिता को कहा जाए कि आप जो चाहे अपने बच्चों के भाग्य में लिख लें तो क्या एक बच्चे का भाग्य बहुत अच्छा और एक का थोड़ा कम अच्छा लिखेंगे? भले ही बच्चे नम्बरवार हों फिर भी माता-पिता तो अपने सभी बच्चों का भाग्य सर्वोत्तम ही लिखेंगे न। अब आप सोच रहे होंगे कि अगर अपने भाग्य के निर्माता हम ही हैं तो फिर परमात्मा को याद करने की आवश्यकता क्या है और परमपिता परमात्मा को बिगड़ी को बनाने वाला क्यों कहा जाता है?

परमात्मा विधि बताते हैं, चलना हमें है

आइये एक उदाहरण से इस प्रश्न का समाधान खोजते हैं। बच्चों के भाग्य निर्माण में एक शिक्षक का बहुत योगदान होता है। योग्य शिक्षकों के बिना हम अच्छे समाज की कल्पना भी नहीं कर सकते। एक शिक्षक, एक ही समय पर, एक ही विधि से सभी विद्यार्थियों को शिक्षा देता है पर क्या सभी का भविष्य एक जैसा होता है? सभी विद्यार्थियों की ग्रहण करने की क्षमता, मेहनत अपनी-अपनी होती है। जो विद्यार्थी असफल हुआ अगर वह अपनी असफलता के लिए अपने शिक्षक को जिम्मेवार ठहराए तो यह कहाँ तक उचित है? दूसरी ओर, जिस बच्चे ने लगन व ईमानदारी से शिक्षा ली तथा आज ऊँचे पद पर आसीन है, उसने भले ही अपना भाग्य स्वयं बनाया परन्तु भाग्य निर्माण में शिक्षकों के योगदान को नजर-अंदाज तो नहीं कर सकता न! परन्तु असफल होने वाला विद्यार्थी अपनी असफलता का दोष अपने शिक्षक को नहीं दे सकता क्योंकि अगर शिक्षक के पढ़ाने के ढंग में कमी होती तो सभी विद्यार्थी असफल होते। ठीक उसी प्रकार, हम अपने सुन्दर भाग्य निर्माण में परमपिता परमात्मा के बहुमूल्य योगदान को कभी नहीं भूल सकते। इसीलिए परमात्मा को सदा भाग्यविधाता कहा जाता है। वे हमें भाग्य बनाने की विधि बताते हैं पर उस विधि पर हम कितने चलते हैं, यह हम पर है।

परमात्मा की याद से हर कर्म को सुकर्म बनाएँ

इस विद्यालय में आकर मैंने सीखा, जब हम कोई भी कर्म परमपिता परमात्मा की याद में रहकर करते हैं तो वह सुकर्म हो जाता है और वही हमारे भाग्य का निर्माण करता है। इसलिए अब मैं अपने हर कर्म पर खूब ध्यान देता हूँ। हर कार्य में परमपिता परमात्मा को साथ रखता हूँ। मेरा सदा

यही प्रयास रहता है कि मैं सर्व का सहयोगी बनूँ। कभी भी किसी को भी थोड़ा-सा भी दुख देने के निमित्त न बनूँ। अगर कोई मुझे कुछ अपशब्द या बुरा कहता है तो भी मैं कभी बुरे शब्द न बोलूँ, उसके कर्म को अपने संकल्पों में भी जगह न दूँ, मेरा 100 प्रतिशत यही प्रयास रहता है। मैं जानता हूँ तथा मानता हूँ कि मेरी हर प्रतिक्रिया भी मेरे भाग्य का निर्माण कर रही है फिर मैं किसी की गलती पर गलत प्रतिक्रिया करके अपने बहुमूल्य समय व सुन्दर भाग्य को खराब कैसे कर सकता हूँ? कोई कुछ भी कहे लेकिन मुझे सदा अच्छा ही करना है, मैं अपने भाग्य के लिए किसी को भी दोषी नहीं ठहरा सकता, यही शिक्षा मैंने इस विद्यालय से ली है जिसे मैं अपने जीवन में, व्यवहार में लाने का प्रयास कर रहा हूँ।

यकीन मानिए, इस ज्ञान ने, मेरे इस प्रयास ने मेरे जीवन को निश्चिन्त, बेहद हल्का तथा खुशनुमा बनाने के साथ-साथ परमपिता परमात्मा के प्यार व अनेक आत्माओं की दुआओं का भी हकदार बना दिया है। मैं अपने प्राणप्रिय शिव बाबा का दिल की गहराइयों से धन्यवाद करता हूँ। अगर आप भी मेरी बात से सहमत हैं कि कलम हमारे हाथ में है तो क्यों न थोड़ा-सा अटेन्शन दें, राजयोग की शिक्षा लें। परमात्मा से स्वयं को जोड़ कर, हर कर्म को सुकर्म बना कर, सर्वोत्तम भाग्य का निर्माण करें। भाग्य हमारे द्वार पर दस्तक दे रहा है, बस हमें उसे अन्दर आने की इजाजत देनी है। ❖

पग-पग पर मिली बाबा की मदद

ब्रह्माकुमार अनिल, गोंदिया (महाराष्ट्र)

मेरा लौकिक जन्म सन् 1971 में एक धनाढ्य परिवार में हुआ। तीन भाइयों में मैं सबसे बड़ा हूँ। सन् 2013 में ईश्वरीय ज्ञान का सात दिनों का कोर्स करके मैं बाबा का बच्चा बन गया।

पाँच मार्च, 2016 को एक दुर्घटना में मेरा सिर पूरा फट गया और दाँत भी टूट गए। मैं मृत्यु के एकदम निकट पहुँच गया और सभी कुछ भूलता गया। नागपुर सी.आई.एम.सी.अस्पताल में डॉक्टरों ने छह-सात घण्टे मेरी सर्जरी की और 40 टाँके लग गए। ब्र.कु. भाई-बहनों ने मेरे निमित्त बहुत योग किया। उनकी दुआओं से यमराज के हाथों से मेरी वापसी हुई।

मेरी एक समस्या थी कि जब दुर्घटना हुई तब मेरी बेटी की 12वीं की परीक्षा थी। वह हमेशा टॉपर होती थी। मेरी वह एक ही संतान है। मुझे चिंता होने लगी कि मेरे कारण उसका रिजल्ट खराब न हो जाए। मैंने बापदादा को अमृतवेले अपनी समस्या बताई। बाबा ने मेरी बात सुनी और उसका फल भी दे दिया। मेरी बेटी गोंदिया में टॉप पोजिशन पर आ गई। भ्राता प्रफुल्ल पटेल जी के हाथों गोल्ड मैडल से उसका सम्मान भी होने वाला है। वाह बाबा वाह! यह लिखते समय मेरी आँखों में बाबा के प्यार व मदद के आँसू बह रहे हैं।

बच्ची का एडमिशन बी.जे.टी.आई.गवर्मेंट कॉलेज, मुंबई में हो गया और स्कॉलरशिप भी मिल गई परन्तु होस्टल नहीं मिला। फिर मैंने बाबा को अर्जी लगाई। बाबा ने मेरी अर्जी मंजूर की और बच्ची को बहुत विपरीत परिस्थितियों में भी होस्टल मिल गया। मैं बाबा का दिल से शुक्रगुजार हूँ, जो बाबा ने बच्ची का ध्यान रखा। मुझे निश्चय है, जीवनपर्यंत मेरी हर समस्या का समाधान बाबा के पास है। अब मैं पूर्ण रूप से स्वस्थ व खूश हूँ और यही गीत गाता रहता हूँ –

''सबकुछ तो मिल गया है तुझे चाहने के बाद,
अब क्या किसी से माँगू, तुझे पाने के बाद।'' ❖

दैनिक जीवन में 'मुरली' की उपयोगिता

ब्रह्माकुमार डॉ.सम्राट सुधा, रुड़की (उत्तराखंड)

मुरली शिवबाबा की अलौकिक वाणी है। यह ईश्वरीय श्रीमत भी है। अपनी अलौकिकता के बावजूद 'मुरली' लौकिक जीवन के वास्तविक कल्याण का आधार भी है। समाजशास्त्रियों और मनोविज्ञानियों, दोनों का मत है कि सम्पूर्ण मानवजाति इस समय दुख, अशान्ति और विघटन के चक्र में है। तनाव अब स्थाई मनोवृत्ति का रूप ले चुका है। ऐसे में मुरली के महत्त्व पर लौकिक दृष्टि से विचार करना सामयिक है।

झकझोर दिया आत्मा को

मैं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से अगस्त, 2014 से जुड़ा हूँ। तब से मुरली को जिस रूप से मैंने सुना, इसे पूर्णत: वर्तमान समय में व्यवहारिक और उपयोगी अनुभव किया। मुरली कक्षा में जाते अभी कुछ ही दिन हुए थे कि मुरली में आये इस महावाक्य ने मेरी आत्मा को झकझोर दिया, ''लगाव की रस्सियों को चेक करो, बुद्धि कहीं कच्चे धागों में तो लिपटी हुई नहीं है।" आज 'फेसबुक' से मित्र बनाने की होड़ सभी में लगी है। फेसबुक, जैसा कि नाम से स्पष्ट है, केवल फेस (चेहरों की, शरीर की) की बुक है, आत्मा की तो है नहीं। एक अनुमान के अनुसार लगभग पचास प्रतिशत फेसबुक सच्ची नहीं, जिसके दुष्परिणाम के समाचार कभी-कभी समाचार पत्रों में पढ़ने को मिलते हैं। 'लगाव की रस्सियाँ' यह महावाक्य, संबंधों की सत्यता का सन्देश दे रहा है। ऐसे संदेशों को यदि आत्मसात किया जाये, तो छली संबंधों से बच कर मनुष्य शान्तिप्रदायक आत्मिक संबंधों का विकास कर सकता है।

साहस की 'तान'

मुरली उनके लिए साहस की 'तान' है जो बाबा की श्रीमत पर चलने वाले हैं। लौकिक जीवन में सत्यपथ के पथिकों के समक्ष अनेक विकट परेशानियाँ आती हैं, जिन्हें मुरली में 'माया' कहा गया है। यह माया आंतरिक और बाह्य दोनों रूपों में है। ''किसी भी विघ्न को हम उड़ा देंगे, इतनी बहादुरी चाहिए, किसी भी बात की परवाह नहीं। वारियर (योद्धा) परवाह करते हैं क्या? बहादुर कभी चूँ-चाँ नहीं करते।'' मुरली का यह महावाक्य ऐसे पथिकों को बहुत प्रेरित करता है।

तपिश के बीच ठंडक

मुरली के इन वाक्यों पर विचार कीजिये, ''श्रेष्ठ भाग्य की लकीर खींचने का आधार है श्रेष्ठ संकल्प और श्रेष्ठ कर्म। लेकिन प्राप्त हुए जन्मसिद्ध अधिकार को, वा चमकते हुए भाग्य के सितारे को कहाँ तक आगे बढ़ाते; कितना श्रेष्ठ बनाते, वह हरेक के पुरुषार्थ पर है।'' आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपाधापी है। समय से आगे निकलने की होड़ है परन्तु धैर्य और योग्यता का अभाव है। मुरली के ये महावाक्य ऐसे तपिश के वातावरण में आत्मिक ठंडक के साथ दिशानिर्देश भी देते हैं।

मृतप्राय: की प्राप्ति के लिए गिरना क्यों?

मोह-माया की प्रवृत्ति इतनी तीव्र है कि आज के अधिकांश लोग देह, धन-सम्पदा और अन्य लौकिक आकर्षणों से बंधे हुए हैं। इस मानसिकता का परिणाम मानसिक, शारीरिक कष्ट व प्राय: अपराध के रूप में सामने आता है। शिवबाबा मुरली में कहते हैं, ''बुद्धि बाबा में रहे। इन आँखों से जो कुछ देखते हो, कब्र-दाखिल होना है।'' ये पंक्तियाँ किसी की भी आँखें खोल देने के लिए पर्याप्त हैं। जब सब नश्वर ही है, तो इस मृतप्राय: की प्राप्ति के लिए गिरना क्यों भला?

ईश्वरीय याद से सुकार्यों में सिद्धि

मुरली का मूलाधार 'याद की यात्रा' अर्थात् परमात्मा

की याद है। प्राय: प्रत्येक व्यक्ति पूजा करता है। इसके पश्चात् भी त्राहि-त्राहि सर्वत्र मची है, क्यों? क्योंकि अधिकांश समय मनुष्य ईश्वर की स्मृति से पृथक है। यदि प्रत्येक कार्य-व्यवहार को करते परमपिता याद रहे, तो पाप हो नहीं सकता। अनुभव के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बाप (परमपिता) की निरन्तर याद में रहने वाला पवित्र, संतुष्ट, विनम्र और समग्रत: सौम्य तो रहेगा ही; साथ ही किसी भी आवश्यकता के समय वह उस परमपिता से तात्कालिक सन्देश प्राप्त कर अपने सुकार्यों में सिद्धि प्राप्त करने वाला भी सिद्ध होगा। याद की यह यात्रा व्यर्थ के संकल्प, बोल और कर्म, तीनों से मनुष्य को मुक्त रखेगी। यह याद की यात्रा 'गुप्त' है, इसमें काई आडम्बर भी नहीं। बाबा ने याद की यात्रा के विषय में कहा है, ''घड़ी-घड़ी अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। यह है गुप्त मेहनत। बाप भी गुप्त है, तो मेहनत भी गुप्त करनी है।''

समय को समीप लाना है

''सम्पूर्णता के आधार पर समय को समीप लाने वाले मास्टर रचयिता भव'' यह महावाक्य बताता है कि समय आपकी रचना है; आप मास्टर रचयिता हो। रचयिता रचना के अधीन नहीं होते हैं इसलिए यह कभी नहीं सोचो कि समय अपने आप पूर्ण बना देगा। आपको सम्पूर्ण बन, समय को समीप लाना है। कोई भी विघ्न आता है तो समय प्रमाण वह जायेगा लेकिन समय से पहले आप परिवर्तन शक्ति द्वारा उसे परिवर्तन कर दो, तो उसकी प्राप्ति आपको हो जायेगी। समय के आधार पर परिवर्तन किया, तो उसकी प्राप्ति आपको नहीं होगी।

लिप्तता से मुक्ति का सन्देश

देह अभिमान से दूर रहने का सन्देश बाबा बार-बार मुरली में देते हैं। लौकिकता में मग्न मनुष्य ऐसे में अपने कार्य की पहचान को ले शंकित हो सकते हैं परन्तु बाबा कर्म की लिप्तता से मुक्ति की ओर इंगित करते हुए कहते हैं, ''श्रीमत पर चलने वाले ही समझदार बनते हैं, वे छिपे नहीं रह सकते।'' मुरली में बाबा आश्वस्त करते हैं, ''मुझे याद करो तो मैं तुम्हें विश्व का मालिक बनाऊँगा। जो बच्चे अच्छी सर्विस करते हैं, मैं उनको याद करता हूँ क्योंकि वे मेरे मददगार हैं; इतनों का कल्याण करते हैं, तो मैं उन्हें प्यार करता हूँ!'' इससे बड़ा आश्वासन भला क्या होगा, जो परमपिता स्वयं हमें प्रतिदिन देते हैं।

मुरली का 'मनसा सेवा' का संदेश किसी अन्य को सुख-शान्ति पहुँचाने का श्रेयस्कर माध्यम है। उलझे मन को मुरली अल्प ग्राह्य होती है जबकि मनसा द्वारा उत्कृष्ट 'प्रकम्पन' देकर हम उसके गुप्त रूप से सहयोगी हो सकते हैं। बाबा कहते हैं, अभी तुमको अपनी ज्योति आपे ही जलानी है। बाप की याद रहे तो यह ज्योति बुझ नहीं सकती।

इस प्रकार सुस्पष्ट है कि मुरली की समस्त शिक्षाएँ लौकिक कार्य-व्यवहार के लिए पूर्ण व्यवहारिक तथा उपयोगी हैं। मुरली आत्मा की औषधि है, जो वर्तमान जगत के मनुष्य को स्वस्थ और समाजोपयोगी बनाने में पूर्णत: सक्षम है। ❖

श्रद्धांजली

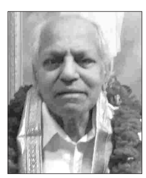

बापदादा एवं दैवी परिवार के अति स्नेही दैवी भ्राता ब्रह्माकुमार सत्यदेव सरीन ने 12 जनवरी, 2018 को अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ले ली। आपकी शारीरिक आयु 92 वर्ष थी और पिछले पाँच दशकों से आपने बाबा के ज्ञान को धारण किया हुआ था। आप सन् 1971 में दिल्ली से माउण्ट आबू निवासी बन गए। आपने बाबा के यज्ञ की नि:स्वार्थ भावना से, अथक होकर समर्पण के साथ सेवाएँ की। आपकी दो पुत्रियाँ (ब्र.कु. बिन्नी बहन तथा ब्र.कु. नीना बहन) तथा एक पुत्र (ब्र.कु. राकेश भाई) ईश्वरीय सेवा में संलग्न हैं। ऐसे त्यागी, तपस्वी तथा सर्व स्नेही भ्राता जी को सम्पूर्ण दैवी परिवार अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करता है।

मेरा बाबा बना कमिश्नर

ब्रह्माकुमार शोभाराम सिंह वैस, देवीपुर, सतना (म.प्र.)

मैंने 2011 में एक भूमि खरीदी थी जिसकी रजिस्ट्री कराकर नामांतरण हेतु तहसील कोर्ट, सतना में दावा किया। विक्रेता के चचेरे भाई ने आपत्ति की कि विक्रित भूमि मेरी है, इसका दावा सिविल कोर्ट, सतना में चल रहा है। इसलिए नामांतरण न किया जाये। तहसीलदार बाबू ने रीडर द्वारा मुझसे पाँच हजार रुपये माँगे, मैंने नहीं दिये। विपक्षी पार्टी ने दे दिये जिससे सिविल कोर्ट के बिना स्थगन आदेश के, मेरे रजिस्टर्ड विक्रय-पत्र के नामांतरण को तहसीलदार ने स्थगित कर दिया।

अपील हुई खारिज

मेरी माता जी, मेरे छोटे भाई के साथ रहती हैं। उनके नाम 3.65 एकड़ भूमि थी। छोटे भाई ने माताजी को धोखा देकर, भूअभिलेखन अधीक्षक, सतना को पैसा देकर अपने पुत्रों के नाम बँटवारा नामांतरण करा दिया और माता जी को भूमिहीन कर दिया। बँटवारा नामांतरण माता और पुत्रों का होता है, नातियों का नहीं। जब पुत्र जीवित न हो तब नातियों का होता है। जब मुझे पता चला तो मैंने दोनों मामलों की अपील एस.डी.ओ., सतना में की। मैं कलेक्ट्रेट कोर्ट, सतना में अर्जी लेखक हूँ जिससे मुझे सभी कर्मचारी व अधिकारी जानते हैं। इसके बावजूद विपक्षी पार्टी का पैसा लेकर मेरी दोनों अपील खारिज कर दी गईं।

न्याय के लिए कमिश्नर कोर्ट में अपील

जब किसी को निचली अदालत से न्याय नहीं मिलता तो वह सही न्याय के लिए उच्च न्यायालय में अपील करता है। मैंने भी न्याय के लिए दोनों मामलों की अपील कमिश्नर कोर्ट, रीवा में की। मेरे वकील को तारीख पेशी लेते एक वर्ष बीत गया लेकिन विपक्षी पार्टी को नोटिस नहीं भिजवाया गया। मैं 10 सितम्बर, 2015 को कमिश्नर कोर्ट, रीवा गया और बाबू से मिला। उसे एक 'ज्ञानामृत' पत्रिका व शिवबाबा का परिचय दिया। फिर उससे कहा कि मेरा मामला आपकी कोर्ट में चलता है, अभी तक विपक्षी पार्टी को नोटिस नहीं भेजा गया। तब उसने कहा, जब मैं कार्य से खाली हो जाऊँगा तब नोटिस भेज दूँगा।

फैसले की पेशी लगी

उसने कलेक्टर कोर्ट, सतना नोटिस भेज दिया। वहाँ से नोटिस तामिल होकर पुनः कमिश्नर कोर्ट, रीवा भेज दिया गया। बाबू ने उसे अगली पेशी (तर्क) हेतु लगा दिया। कमिश्नर कोर्ट में नम्बरवार बहस सुनी जाती है। मैं 31 दिसम्बर, 2016 को बाबा से मिलने मधुबन गया था। मैंने बाबा को पत्र लिखा कि बाबा कमिश्नर कोर्ट, रीवा में जो दो मामले चल रहे हैं, वे मेरे नहीं हैं, आपके हैं। मैं तो निमित्त मात्र हूँ। कमिश्नर भी निमित्त मात्र है। फैसला आपको करना है। मेरी 23 जनवरी, 2017 को पेशी थी, मैं बाबा को साथ लेकर कमिश्नर कोर्ट, रीवा पहुँचा और मुख्य बाबू से मिला। मैंने उन्हें एक 'ज्ञानवीणा' और शिवबाबा का परिचय दिया। उसने कहा, मैं आपकी फाइल कमिश्नर साहब के पास रखूंगा और जब आपका नाम बोलूँगा तब आप साहब से विनय कर लेना। जब मेरा नाम बोला गया तब मेरे वकील ने लिखित बहस साहब को दी और 15 मार्च, 2017 को फैसले की पेशी लगा दी।

सच के पक्ष में फैसला

मैं 1 मार्च, 2017 से, जब तक फैसला नहीं हुआ, तब तक कमिश्नर साहब के ऊपर योग का प्रयोग करता रहा। अमृतवेले जब योग में बैठता था तो कमिश्नर साहब को इमर्ज कर उनके ऊपर बाबा से पवित्रता और शान्ति की किरणें डालता था और उनसे कहता था कि सच के पक्ष में

शेष पृष्ठ 17 पर

काल्पनिक ‘ब्रह्मास्त्र’ का वास्तविक रूप
‘शुभभावना’

ब्रह्माकुमार विनायक, सोलार प्लांट (शांतिवन), आबू रोड

पौराणिक कहानियों में ब्रह्मास्त्र का नाम मशहूर है। बताया जाता है कि किसी ने, किसी को हराने की तमन्ना रख कठिन तपस्या की। भगवान ने उसकी तपस्या से संतुष्ट होकर उसको ब्रह्मास्त्र प्रदान किया जिससे उसने जीत प्राप्त की। विचार करने की बात है कि तपस्या एक सकारात्मक साधना है जो कल्याणकारी फल देती है। क्या उसने केवल एक को हराने के लिए इतनी कड़ी तपस्या की? जिसके साथ ब्रह्मा देवता का नाम जुड़ा हुआ है, इतने महान ब्रह्मास्त्र का उपयोग रचनात्मक होने के बजाय केवल एक व्यक्ति को जीतने या उसके प्राणहरण के लिए हुआ? भगवान जो स्वयं रचयिता हैं, प्रेम के सागर हैं, क्या उन्होंने किसी को दुख देने के लिए अस्त्र प्रदान किया? जब इन सांकेतिक कहानियों के रहस्य को सुलझाते हैं तब पता चलता है कि वास्तविक अर्थ क्या है।

सच्ची जीत क्या है

तीन प्रकार की जीत होती है। बाहुबल की जीत, बुद्धिबल की जीत और दिल पर जीत। बाहुबल और बुद्धिबल की जीत, किसी को हराकर पाई हुई जीत है। इसमें हार-जीत, तेरे-मेरे की महसूसता होती है जो वैर-विरोध, ईर्ष्या-द्वेष का आधार है। इससे आपसी एकता टूटती जाती है और भिन्नता बढ़ती जाती है। इन दोनों प्रकार की जीत में शत्रु को वश में तो कर सकते हैं लेकिन अपना नहीं बना सकते या अपनेपन की महसूसता उसको नहीं करा सकते हैं, इसलिए ये दोनों प्रकार की जीत, उत्तम जीत नहीं हैं। केवल दिल पर प्राप्त जीत ही एक ऐसी अनोखी जीत है जिसमें हारने वाला, जीतने वाले से भी अधिक आनंद का अनुभव करता है और जीतने वाले को अपना समझकर उस पर न्योछावर हो जाता है। यह है सच्ची जीत।

सच्ची जीत पाने का अस्त्र

इस विजय को प्राप्त करने का केवल एक ही अस्त्र है शुभभावना। इसको ही ब्रह्मास्त्र कहा जा सकता है क्योंकि इस सृष्टिनाटक में सबसे सर्वोत्तम विजय है दिल पर विजय। उसको प्राप्त कराने वाला अस्त्र है शुभभावना।

दो प्रत्यक्ष उदाहरण

इस दुनिया में बहुत-से लोग अलग-अलग नाम-रूप से भगवान को याद करते हैं, उनका ध्यान करने के लिए दिन में कुछ समय जरूर निकालते हैं। घर कितना भी छोटा हो, भगवान के लिए एक कोना जरूर रखेंगे। उनके नाम पर दान-पुण्य करेंगे। अपने से कोई भूल हो या मन की गुप्त बात हो, मंदिर में जाकर भगवान के सामने बताएँगे, उनसे राय, समाधान मागेंगे। आश्चर्य की बात है, जिनको इन आँखों से देखा ही नहीं, बात भी नहीं की, उनकी मूर्ति पर इतना प्रेम, विश्वास, बलिहारी कैसे? उनमें ऐसी कौन-सी विशेषता या शक्ति है जो विश्व की सात सौ करोड़ आत्माओं के दिल पर वे विराजमान हैं? कारण स्पष्ट है कि भगवान सर्व आत्माओं के प्रति सदा शुभभावना रखते हैं। इस सृष्टिनाटक में केवल भगवान शिव ही ऐसे विशेष अभिनेता हैं जो कभी भी, किसी भी आत्मा के प्रति अशुभ या अकल्याणकारी भावना प्रकट नहीं करते हैं। भगवान शुभभावनाओं के भण्डार हैं, वे शुभभावनाएँ फुहारते रहते हैं। यही कारण है कि सभी उनको अपना समझते हैं।

भगवान के साथ-साथ लौकिक माता-पिता भी सदा बच्चों के लिए शुभ ही सोचते हैं। स्वयं भले भूखे रहते पर बच्चों को भरपूर खिलाएंगे। उनको गरीबी की महसूसता नहीं होने देंगे। खुद अशिक्षित रहेंगे लेकिन बच्चों को पढ़ाकर बड़े अधिकारी बनाने का सपना देखेंगे। इसलिए ही

उनको भगवान के बाद दूसरा स्थान दिया गया है। 'मातृदेवो भव, पितृदेवो भव' कहकर सम्मान दिया जाता है।

एक भयानक विघ्न

अब समस्या यह है कि जो हमारे निकट संबंधी हैं, स्नेही हैं, उनके प्रति तो शुभभावना सदा जाग्रत रहती ही है लेकिन यह भावना सर्व के प्रति अपने आप प्रकट नहीं होती। उसकी जगह ईर्ष्या, द्वेष, घृणा आदि न चाहते हुए भी व्यक्त हो जाती हैं। शुभभावना को उत्पन्न करने की शक्ति बिल्कुल ही सीमित है और अशुभ भावनाएँ प्रबल हैं, तो इस विघ्न का निवारण कैसे करें?

इस समस्या का कारण हैं संस्कार? जो बीज हम बोएँगे, उसका ही वृक्ष और फल निकलेगा। आम का बीज है तो वृक्ष व फल भी आम का, बबूल का है तो बबूल। वैसे ही संस्कार रूपी बीज से संकल्प रूपी वृक्ष और भावना रूपी फल निकलते हैं। अगर बीज कड़वा है अर्थात् संस्कार आसुरी हैं तो शुद्ध संकल्प के बदले विकारी संकल्पों का वृक्ष पैदा होगा और उसका फल शुभभावना के बदले दुर्भावना ही प्रकट होगी। संकल्प-कर्म-संस्कार की परिक्रमा में पहले संकल्प उठता है, उस अनुसार जब कर्म करेंगे, तो वही संस्कार बन अभिलेख के रूप में आत्मा में जमा हो जाता है। कई जन्मों से काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के संकल्पों के अधीन होकर किये हुए पापकर्मों के कारण हमारे संस्कार अशुद्ध और आसुरी हो गये हैं जिसके कारण अशुभ भावना ही प्रकट हो रही है जो दिलतख्तनशीन बनने में एक महाविघ्न है।

शुभभावना रूपी ब्रह्मास्त्र कैसे प्राप्त करें?

अगर हम मीठा फल चाहते हैं तो रास्ता एक ही है, कड़वे फल के वृक्ष को बीज सहित निर्मूल करें और मीठे फल का वृक्षारोपण करें। संकल्पों को शुभभावना से संपन्न करने के लिए कई जन्मों से जमे हुए आसुरी संस्कारों को संपूर्ण समाप्त कर दैवी संस्कारों को धारण करें। यहाँ जरूरत है तपस्या की अर्थात् परमात्मा शिव द्वारा सिखाए गए सहज राजयोग के अभ्यास की। यह है संस्कार परिवर्तन की अनोखी विधि। लोहे को चुम्बक में परिवर्तन करने के लिए, लोहे को अग्नि में डालकर उस पर जमी हुई जंग को जला देते हैं, बाद में एक मूल शक्तिशाली चुम्बक के साथ बांधकर उसको निर्धारित समय तक रख देते हैं। इससे चुम्बक के द्वारा लोहे का सशक्तिकरण हो जाता है। इससे वह लोहा चुम्बक बन जाता है।

सहज राजयोगाभ्यास में भी स्वयं को इस देह से अलग आत्मज्योति समझकर, सब आत्माओं के परमपिता, परम-शिक्षक, परम-सद्गुरु ज्योतिर्बिन्दु परमात्मा शिव से मन और बुद्धि द्वारा संबंध जोड़ना पड़ता है अर्थात् याद करना पड़ता है। परमात्मा शिव, ज्ञान और गुणों के सागर हैं, सर्वशक्तिवान हैं। याद के माध्यम से जब हम उनके सानिध्य में रहते हैं तब योगाग्नि के द्वारा शिवपिता, आत्मा के आसुरी संस्कार रूपी जंग को भस्म कर पवित्र बना देते हैं। साथ-साथ शुभ भावनाओं को उत्पन्न करने की क्षमता वाले संस्कार आत्मा में धारण कराते हैं। यह हम बच्चों के पुरुषार्थ के प्रति परमपिता परमात्मा का वरदान है। इसको ही ब्रह्मास्त्र कहकर कहानियों में यादगार के रूप में वर्णन किया गया है।

क्या-क्या कर सकता है ब्रह्मास्त्र?

कहा जाता है, प्रतियोगी कितना भी क्रूर, आसुरी शक्तियों से भरपूर, धन-दौलत से मालामाल, सर्वविद्या पारंगत क्यों न हो लेकिन ब्रह्मास्त्र को न रोक सकता है और न ही सामना कर सकता है। वैसे ही हमारे सम्पर्क में आने वाला व्यक्ति अति विकराल, कड़े संस्कार वाला क्यों न हो लेकिन उस पर जब हम शुभभावना का अस्त्र प्रयोग करेंगे तब यह शक्तिशाली भावना उस व्यक्ति की आसुरी भावनाओं को समाप्त कर देगी। परिणाम? वह दिल से हमारे सामने झुकेगा। झुकने वाला उसको हार नहीं समझेगा पर अपना भाग्य समझकर पुलकित होगा।

जब ब्रह्मास्त्र हाथ में रहता है तब औरों की तरफ से

आने वाले कोई भी अस्त्र आक्रमण नहीं कर सकते बल्कि ब्रह्मास्त्र में विलीन हो जाते हैं। वैसे ही शुभभावना के संस्कार वालों के प्रति कोई, कितना भी वैर-विरोध, ईर्ष्या-द्वेष करे लेकिन उसका अंशमात्र प्रभाव भी उन पर नहीं होगा। शुभभावना की सकारात्मक शक्ति नकारात्मक तरंगों को तटस्थ कर देगी।

ब्रह्मास्त्र जिनके पास है, उनके साथी भी शत्रुओं के भय से मुक्त रहते हैं। शुभभावना वाले व्यक्ति के आस-पास रहने वाले भी अपने को सुख-शान्ति की छत्रछाया में सुरक्षित अनुभव करेंगे क्योंकि शुभभावना का बीज है पवित्र संस्कार, जो सुख-शान्ति का जनक है।

स्थूल अस्त्र पत्थर के किले को सुरक्षित रखेगा लेकिन शुभभावना, परिवार की एकता रूपी किले को इतना सशक्त बनाएगा कि तन से प्राण भले निकलें पर एकता और प्रेम नहीं टूटेगा। स्थूल अस्त्र केवल आँखों से दिखने वाली वस्तु का नाश करेगा लेकिन शुभभावना, तमोप्रधान वायुमण्डल को सतोप्रधान में परिवर्तन करने का एकमात्र साधन है।एक ब्रह्मास्त्र में अन्य सर्व प्रकार के अस्त्रों की शक्ति सम्मिलित रहती है। शुभभावना के प्रयोग से हम ज्ञान, दिव्यगुण और शक्तियों का दान भी दे सकते हैं जो उसके साथ संयुक्त रूप में हैं।

सामने न दिखने वाले निशाने पर भी इस अस्त्र का प्रयोग कर सकते हैं। जिन पर शुभभावना का प्रयोग करेंगे वे दुनिया के किसी भी कोने में हों, पर्वत, सागर सब पार करके भी यह उनके पास पहुँचेगी और उनको भरोसे संपन्न अंचली की महसूसता करायेगी। इस दुनिया में सबसे बहुमूल्य और विरल चीज है शुभभावना। जिसके पास शुभ भावनाओं का खजाना है वह इस दुनिया में सबसे अधिक संपत्तिवान है। वह अपने सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली हर आत्मा को संतुष्टता की अनुभूति कराता है।

शुभभावना का प्रयोग कैसे करें?

जैसे अगरबत्ती की सुगंध किसी एक व्यक्ति के प्रति या एक स्थान पर ही नहीं रहती है, वह जहाँ जाती है वहाँ सुगंध फैलाना ही उसका स्वभाव है। वैसे ही हमारे संस्कार से निकलने वाला हर संकल्प शुभभावना संपन्न हो, तभी वह शक्ति संपन्न रहेगा और ब्रह्मास्त्र का काम करेगा। ❖

बाबा का फरमान

ब्र.कु. रेणुका अरुडकर, अकोला

तन-मन-धन से कर सेवा तू
यह है बाबा का फरमान।

दुनिया की फिकर छोड़कर,
देह बंधनों से मोह तोड़कर
तू धारण कर स्वमान
यह है बाबा का फरमान।।

क्रोध मुक्त हो, स्नेह से रहना,
शान्ति से उलझन सुलझाना,
कब न किसी का हो अपमान,
यह है बाबा का फरमान।।

अब तक थे तुम माया रावण,
अब बनना है लक्ष्मी-नारायण,
हो शुद्ध अपना खान और पान,
यह है बाबा का फरमान।।

देख न तू औरों की कमियाँ,
गुणों से भरले अपनी डलिया,
बस दो पल के हम मेहमान,
यह है बाबा का फरमान।।

याद न कर अब देह के रिश्ते,
उड़ जा गगन में प्यारे फरिश्ते,
बाप तेरा है सर्वशक्तिवान।
यह है बाबा का फरमान।।

होली का शुभ सन्देश

होली का पर्व जितना पवित्र है, उतना ही उसका मनाने का ढंग अत्यंत रूढ़ीवादी है। पर्व के नाम पर सब प्रकार की उद्दण्डता करने की सामाजिक छूट का यह एक अच्छा ढंग निकाला गया है। भारत जैसे मर्यादित देश में होली का आदि स्वरूप भी ऐसा ही रहा होगा, बुद्धि यह कभी भी स्वीकार नहीं करती। होली ही क्या, अनेक पर्वों की आड़ में भारतवासी गलत रीति-रिवाज अपनाकर दुर्व्यसनों द्वारा आन्तरिक समाज रचना को खोखली बनाते चले जा रहे हैं। दिवाली पर जुआ, होली पर हुड़दंग और शिवरात्रि पर भांग – सारे ही प्रमुख पर्वों को कलंकित कर दिया गया है। दिवाली का दिवाला निकल गया है। होली खोखली हो गई है और शिवरात्रि घोर रात्रि में परिणत हो गई है। होली की तो एक-एक रस्म चुन-चुन कर, विकृत करके जीवन के अन्तरंग में ऐसी धारण कर ली गयी है कि अच्छा शिक्षित कहलाने वाला वर्ग भी इस दिन न जाने कितने समय के संजोये दुर्व्यसनों के अरमान तृप्त करता है।

गहरी आध्यात्मिक भूमिका

वास्तव में पर्वों की प्रत्येक रस्म के पीछे एक बहुत बड़ी और गहरी आध्यात्मिक भूमिका छिपी रहती है जैसे कि शरीर के अन्दर चैतन्य शक्ति आत्मा छिपी हुई है। शरीर स्थूल है, आत्मा सूक्ष्म है। पर्वों की विभिन्न रस्मों का आन्तरिक पक्ष, आत्मा की कोटि में आता है और स्थूल पक्ष, शरीर की कोटि में आता है। होली पर्व की रस्मों के भी अन्तरंग व बहिरंग – दो पक्ष हैं। अन्तरंग पक्ष में हैं रोली, कोली और टोली। बहिरंग पक्ष में है होली जलाना।

रोली, कोली और टोली

होली खेलने की रस्म में वास्तविक प्राचीन सतोगुणी ढंग में पहले रोली का टीका एक-दूसरे के मस्तक पर लगाते हैं, उसके बाद गुलाल उड़ाते हैं और फिर कोली भर-भरकर गले मिलते हैं और फिर मिठाई भी खिलाते हैं। यदि संक्षेप में इन तीन क्रियाओं का नामकरण करें तो ये हो गए – रोली, कोली और टोली (मिठाई)।

होली सो हो-ली

मस्तक पर रोली का टीका, आत्मिक स्वरूप के स्मरण की प्रथा है। लाल गुलाल के उड़ते हुए गुब्बारे मूलवतन या परमधाम की मोहक लालिमा का स्मरण कराते हैं। आत्मा, ज्योति का एक चैतन्य बिन्दु है और हमारे इस चोले में वह मस्तक में भृकुटि के मध्य निवास करती है। रोली का टीका लगते ही हमें यह याद आना चाहिए कि मैं और यह दूसरा व्यक्ति दोनों ही ज्योतिबिन्दु आत्मा हैं और गुलाल उड़ाकर यह स्मरण हो कि हम वास्तव में इस प्रकार की लालिमा-युक्त परमधाम के निवासी हैं। इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर केवल पार्ट खेलने के लिए, भिन्न-भिन्न वस्त्र बदलने के समान, भिन्न-भिन्न जन्मों में, भिन्न-भिन्न शरीर धारण करते हैं। चाहे स्त्री का चोला हो या पुरुष का, सबके अन्दर ज्योतिबिन्दु चैतन्य शक्ति आत्मा ही विराजमान है और आत्मा रूप में भाई-भाई के अपने असली नाते की स्मृति आते ही फिर शुद्ध आत्मिक स्नेह से कोली भरकर गले मिलें कि अपने इस अविनाशी नाते को आगे भी याद रखेंगे। अब तक जो कुछ ईर्ष्या-द्वेष, भाव-स्वभाव की बात रही हो वह होली सो हो-ली (हुआ सो हुआ), आगे से हम सदैव स्नेहयुक्त रहेंगे। मन को इन भावों से परिष्कृत कर मीठी टोली (मिठाई) एक दूसरे को खिलाकर आगे के लिये अपनी बोली को भोली बनाने का दृढ़ संकल्प लेते हुए प्रत्येक से होली खेलने जाएँ तो हमारे अन्त:करण में कितना न बल भरेगा।

होली जलाना

होली जलाने की प्रथा में हम देखते हैं कि बाहर मोहल्लों की होली जलने के बाद उस होली में से थोड़ी-सी आग लेकर अपने घरों में गोबर की गुलरियों की मालाओं की बनी मीनार-सी को आग लगाकर घर की होली भी जलाते हैं। गुलरियों की माला के बीच में, आटे के अन्दर एक धागा लपेटकर भी रखते हैं। आग समाप्त होने पर इसके ऊपर का आटा तो जल जाता है पर अन्दर का धागा रह जाता है। यह इस बात का प्रतीक है कि शरीर रूपी आटा जल जाता है परन्तु धागे रूपी आत्मा का कभी नाश नहीं होता है।

होली के इस पर्व पर जो अपनी चोली (आत्मा) को ईश्वरीय ज्ञान और योग के घोल में घोली हुई रखते हैं, वे रोली का टीका लगवाकर सतयुगी डोली में बैठ परमात्मा साजन के साथ सगाई कर पाते हैं और सतयुगी राज्य-भाग्य के अधिकारी बन नर से श्री नारायण और नारी से श्री लक्ष्मी स्वरूप पद पाते हैं। ❖

देश के उत्थान में अप्रतिम योगदान

ब्रह्माकुमार राधेश्याम त्रिपाठी, पूर्व एडिशनल कमिश्नर, गोमतीनगर, लखनऊ (उ.प्र.)

वर्ष 2014 में अपने एक मित्र के माध्यम से मैं ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के सम्पर्क में आया। इसके बाद अनेकों बार माउण्ट आबू जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। दादी जानकी जी को भी सुना और साक्षात् देखा। इस उम्र (102) में इतनी ऊर्जा वाकई आश्चर्य है। यह शिव बाबा के आशीष से ही संभव है। ओ.आर.सी. भी जा चुका हूँ। ब्रह्माकुमारी शिवानी बहन जी को दिल्ली में सुन चुका हूँ। पीस ऑफ माइंड चैनल, जब मौका मिलता है जरूर देखता हूँ। मुरली पढ़ता रहता हूँ।

ब्रह्माकुमारीज के सम्पर्क में आने पर यह पता चला कि इस संस्था के साथ रहने वाला व्यक्ति कभी डिप्रेशन में नहीं जा सकता है। यहाँ आत्मा के मूल स्वरूप के बारे में बताया जाता है। राजयोग की प्रैक्टिस से बड़ी आसानी से परमसत्य शिवबाबा से जुड़ सकते हैं और अपनी खोई शक्तियों और गुणों की पुन: प्राप्ति कर सकते हैं। यहाँ के मोटिवेशनल लेक्चर्स वाकई जिंदगी की दिशा मोड़ देते हैं। स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रम तो सीधे मन और शरीर पर प्रभाव डालते हैं। बड़ी मनोवैज्ञानिक तकनीक से स्वास्थ्य रक्षण की बातें बतायी जाती हैं। यहाँ डॉक्टर्स, इंजीनियर्स, प्रोफेशनल्स, स्टूडेंट्स, सोशल लीडर्स के लिए अलग-अलग कार्यक्रम चलते ही रहते हैं। माउण्ट आबू पर स्थित ग्लोबल हॉस्पिटल में पैरालिसिस की ट्रीटमेंट देखी। गजब का सुधार दिखा। अनुपम ट्रीटमेंट। ब्रह्माकुमारीज में जैविक खेती भी होती है, मेडिटेशन और संगीत की सकारात्मक ऊर्जा से पौधे अमृत उत्पाद देते हैं। यहाँ का नवीनतम सोलर प्लाँट तो अद्भुत है। आश्रम की जरूरतों से ज्यादा बिजली पैदा करता है।

यहाँ का डायनिंग सिस्टम अद्वितीय है। ऑटोमैटिक मशीनों से रोटियों का बनना सचमुच अद्भुत है। भोजन और प्रसाद की बहुत ही अनुशासित व्यवस्था है। सभी स्वयं काम करते हैं। हजारों लोग एक साथ आसानी से भोजन ग्रहण करते हैं। सब कुछ बहुत सुंदर और सुव्यवस्थित है।

कुल मिलाकर इस संस्था से जुड़ने से गर्व का अनुभव होता है। वास्तव में यह संस्था बिना किसी वाद-विवाद में पड़े आत्मा का सच्चा ज्ञान देकर समाज और देश के उत्थान में अपना अप्रतिम योगदान दे रही है।

जनवरी, 2017 से ज्ञानामृत पढ़ रहा हूँ। इसके लेख भी बहुत अच्छे और मोटिवेशनल होते हैं। अपनी इन्हीं खूबियों के कारण आज यह संस्था वैश्विक बन चुकी है और विश्व के लगभग 140 देशों में इसकी शाखायें सफलतापूर्वक चल रही हैं। ❖

सृजनहीनता अर्थात् परनिन्दा

ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी

सकारात्मक, सुन्दर, ताल और लययुक्त निर्माण को ही सृजन कहते हैं। जब भी इन्सान अपनी आत्मा के साथ लयबद्ध होता है तब उसके भीतर की शक्तियाँ बाहर प्रस्फुटित होने लगती हैं। उनसे संसार में नित नूतन सौन्दर्य अभिव्यक्त होता है और यही कहलाती है सृजनात्मकता।

सृजनशीलता मानवीय स्वभाव है

सृजनात्मक होना तथा सदा आनन्दित रहना जीवात्मा का स्वभाव है। यदि मानव शुद्ध भावों में जीए तो वह सृजनात्मक होता ही है। जिस प्रकार खिलना व सुरभि फैलाना, फूलों का स्वभाव है; परागकणों को चुनना व मधुर गुंजार करना, भ्रमरों का स्वभाव है; इसी प्रकार सतत् सृजनशील होना मानव मात्र का भी स्वभाव है।

इस सृष्टि के निर्माण में हर प्राणी का योगदान है, मात्र उनको छोड़कर जो दोषदर्शी हैं अर्थात् उन लोगों ने अपना एक मात्र कर्त्तव्य परनिन्दा को ही बना लिया है। देखा जाए तो ऐसे लोगों के भीतर भी सृजनात्मक प्रतिभा तो है परन्तु वे भटके हुए हैं अर्थात् द्वेष-बुद्धि होने के कारण उनकी सोच विकृत, रुग्ण व विक्षिप्त हो गई है।

कोई परनिन्दक क्यों बनता है?

जो व्यक्ति औरों को तो योग्यता प्रकट करने के उचित अवसर पाते देखता है परन्तु वह स्वयं प्राप्त अवसरों को ठीक से पहचानने में भूल कर बैठता है या जानबूझ कर ठुकरा देता है, तब वह दूसरों को देखकर कुंठित होता रहता है। उसकी कुंठायें ही उसे परनिन्दक बना देती हैं। दूसरों को बढ़ते देखकर वह ईर्ष्या करता है और अपनी आत्मशक्तियों पर शंकाशील बना रहता है। परनिन्दा वही करता है जो स्वयं कुछ नहीं कर पाता। पराई निन्दा से कुछ लोग स्वार्थ सिद्ध करने की कोशिश करते हैं। निन्दक व्यक्ति जब निन्दा करने योग्य मौके तलाश लेता है तो वह महसूस करता है जैसे उसने कोई बहुत बड़ी जंग जीत ली और फिर जब वह दूसरों की परेशानी का कारण बनता है तब उसका क्षुद्र अहम् तृप्त होता है।

परनिन्दक की विशिष्टता

परनिन्दक व्यक्ति में एक विशिष्टता जरूर होती है कि वह 100 प्रतिशत अच्छाइयों में भी बुराई ढूंढ़ने में माहिर होता है अर्थात् उसमें निरीक्षण क्षमता अधिक होती है। ऐसा व्यक्ति यदि दूसरों में दोष ढूंढ़ने की बजाए स्वयं के दोष देख, उनका निवारण कर ले तो वह सच्चा आत्म-सुधारक भी बन सकता है।

परनिन्दा का दुष्परिणाम

निन्दक प्रवृत्ति वाले लोग अपने अमूल्य समय, अमूल्य ज्ञान व अमूल्य शक्तियों का अपव्यय करके भला कभी सुख की नींद ले सकते हैं? अंततः पछताते नजर आते हैं क्योंकि वे जीवन प्रवाह में आई चुनौतियों व बाधाओं का सामना समय पर नहीं कर पाते। परनिन्दक हतभागी हैं। वे प्राप्त सौभाग्य को सतत् कम करते हैं।

परनिन्दक नहीं, परोपकारी

परनिन्दा से हासिल कुछ नहीं होता, यहाँ तक कि उसके अपने सगे-सम्बन्धी व मित्र भी उसे सच्चा हितैषि नहीं मानते और ना ही उसे कोई प्यार करते हैं। यहाँ तक कि उस पर कोई एतबार भी नहीं करते। परनिन्दा करके अपना कीमती वक्त बर्बाद करने के बजाए यदि मनुष्य अपने जीवन को किसी श्रेष्ठ व परोपकारी उद्देश्य से जोड़े व अपनी क्षमताओं को सर्वहित में लगाए तो परमात्म-प्यार तो मिलेगा ही साथ-साथ समय-श्वास-संकल्प भी सफल होंगे और दिव्य आनन्द की अनुभूति भी होगी। ❖

कड़वी गोलियाँ चबाई नहीं, निगली जाती हैं, उसी प्रकार जीवन में अपमान, असफलता, धोखे जैसी कड़वी बातों को सीधे गटक जायें, उन्हें चबाते रहेंगे अर्थात् याद करते रहेंगे तो जीवन कड़वा ही होगा

ज्ञान और योग ने मुझे जीना सिखाया

ब्रह्माकुमारी सुदेशना, सीलीगुड़ी

मेरे एकमात्र पुत्र (22 साल) की दुर्घटना में मस्तिष्क-मृत्यु (Brain Death) हो गई। उसके इलाज के लिए बहुत भारी रकम की जरूरत पड़ी। मैं इस पुत्र के अलावा कुछ और सोच ही नहीं सकती थी। डॉक्टर ने 27 दिसम्बर, 2014 को बैंगलुरू ले जाने के लिए कहा। मैं अपनी जमीन-जायदाद बेचकर पुत्र को वहाँ लेकर गई और NIMHANS (National Institute of Mental Health and Neuro Science) में एडमिट कर दिया। मन में यही आश थी कि मेरा पुत्र जरूर बच जाएगा परन्तु 10 मिनट के अंदर ही डॉक्टर ने जवाब दे दिया। मैं जो सपने में भी नहीं सोच सकती थी वह हो गया।

निश्चय हुआ, यही सच्चा ज्ञान है

मन की शान्ति के लिए एक शुभचिन्तक बहन ने ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र पर जाने की सलाह दी। वह दिन था 27 फरवरी, 2015, मेरी जिन्दगी का यादगार दिन। इसी दिन मेरे भाग्य का ताला खुला था। मैं और मेरे युगल इसी दिन प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय पहुँचे थे। इसी दिन मेरा भगवान से सम्बन्ध जुटा था और मैं जान सकी कि मैं कौन हूँ, कहाँ से आई हूँ और यह भी पता चला कि शिवबाबा एक मात्र भगवान हैं। हम दोनों ने सात दिन का कोर्स किया और निश्चय हो गया कि यही सच्चा ज्ञान है जो भगवान दे रहे हैं। पहले दिन ब्रह्मा बाबा की तस्वीर में अपने लौकिक पिता को महसूस किया जिन्होंने तीन साल पहले शरीर छोड़ दिया था। मैं दंग रह गई यह देखकर कि ब्रह्मा बाबा की आँखों की पुतली हिल रही है और मुझे बड़े प्यार से दृष्टि देते हुए पास बुला रहे हैं। बाबा की दृष्टि पड़ते ही मैं निहाल हो गई। एक ब्रह्माकुमारी बहन ने मुझे बताया कि ब्रह्मा बाबा हमारे अलौकिक पिता हैं और उनकी भृकुटि के मध्य शिवबाबा हैं जो हमारे पारलौकिक पिता हैं। उस दिन मैंने बाबा के साथ काफी देर तक रूहरिहान की।

काश! ज्ञान पहले मिला होता

इसके बाद मैं आत्मा के 84 जन्मों के बारे में, सृष्टि-चक्र (जो 5000 साल का है) के बारे में जान पायी। वर्तमान समय हमारा अंतिम जन्म है। हम पुरुषोत्तम संगमयुग पर खड़े हैं। शिवबाबा इस धरा पर हम बच्चों को विश्व की बादशाही देने के लिए आये हैं। ये पाठ सुनते-सुनते मैं बहुत ही रोमांचित हो उठी। मैंने सोचा, काश! भगवान का यह ज्ञान मुझे पहले मिला होता। इतनी बड़ी विपत्ति के समय शिव बाबा के साथ-साथ अलौकिक भाई-बहनों का सहयोग मिला। मन में साहस जगा। लौकिक परिवार वाले, जिन्हें मैं वर्षों से जानती थी, साथ छोड़ चुके थे परन्तु जिन्हें मैं कभी पहचानती भी नहीं थी, दैवी परिवार के उन सभी भाई-बहनों ने मुझे असीम प्यार दिया।

ईश्वरीय ज्ञान से संभाला अपने को

मैंने विपत्ति की घड़ी में ईश्वरीय ज्ञान के माध्यम से अपने आपको संभाला है। योग और ज्ञान ने मुझे जीना सिखाया है। ड्रामा में पुत्र का साथ हमारे लिए इतने ही दिनों का था। एक मात्र डायरेक्टर शिवबाबा ही जानते हैं कि किसका, किसके साथ, कितना पार्ट है। मैं बाबा से यही दुआ करती हूँ कि पुत्र की आत्मा ने जिस घर में भी जन्म लिया हो, वहाँ अपने माता-पिता एवं परिवार वालों को ढेर सारा सुख व प्यार प्रदान करे।

जब कभी मन में आता है कि एक मात्र पुत्र को छोड़कर किस तरह से जीवित हूँ तभी मुझे बाबा के शब्द ''मीठे बच्चे'' याद आ जाते हैं और अलौकिक परिवार का नि:स्वार्थ प्रेम याद आ जाता है। अभी बाबा हमारे साथ हमेशा रहते हैं और मन गाता है –

''जब बाबा मेरे साथ हैं, फिर डरने की क्या बात है।''

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
▶▶ फोटो, लेख, कविता या अन्य प्रकाशन सामग्री के लिये : **E-mail : gyanamritpatrika@bkivv.org**
Website: gyanamrit.bkinfo.in **Ph. No. : (02974) - 228125**

1.मुम्बई (नेपीएन्सी रोड)- महाराष्ट्र के राज्यपाल महामहिम भ्राता सी.विद्यासागर राव तथा महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री भ्राता देवेन्द्र फडणवीस को ईश्वरीय सन्देश देते हुए ब्र.कु.रुक्मिणी बहन। **2.शान्तिवन (आबू रोड)-** 'माइंड बॉडी मेडिसिन' विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्‌घाटन करते हुए डॉ.बनारसी भाई, डॉ.प्रताप मिड्ढा, डॉ.एन.टी.आर.स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय के उप-कुलपति डॉ.सी.वेंकटेश्वर राव, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी, ब्र.कु.निरंजना बहन, ब्र.कु.निर्वैर भाई, डॉ.गिरीश पटेल तथा अन्य। **3.नवसारी-** शिवजयंती कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए कृषि विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष चंदू भाई टिम्बडिया, बैंक के शाखा प्रबंधक भ्राता ए.वी.रमन्ना, ब्र.कु.गीता बहन, ब्र.कु.उर्मिला बहन, कृषि विश्वविद्यालय के उप-कुलपति भ्राता सी.जे.डांगरिया तथा ब्र.कु.गोविंद भाई। **4.नाहन-** 'सम्बन्धों में मधुरता' विषयक कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए ब्र.कु.उषा बहन, हिमाचल प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष डॉ.राजीव बिन्दल, पूर्व हिमफेड अध्यक्ष भ्राता अजय बहादुर, ब्र.कु.मीना बहन तथा ब्र.कु.रमा बहन। **5.मुम्बई(मलाड)-** शिवदर्शन मेले का उद्‌घाटन करते हुए ब्र.कु.दिव्यप्रभा बहन, सांसद भ्राता गोपाल शेट्टी, क्लासिकल सिंगर तथा पद्म विभूषित बहन डॉ.सोमा घोष, संगीत निदेशक भ्राता दिलीप सेन, ब्र.कु.कुन्ती बहन तथा अन्य। **6.मालेबेनूर-** नवनिर्मित 'राजयोग भवन' का उद्‌घाटन करते हुए कर्नाटक के राज्यपाल महामहिम भ्राता वजुभाई वाला, ब्र.कु.बसवराज भाई, ब्र.कु.मंजूला बहन तथा अन्य। **7.अहमदनगर-** जी 'सारेगामापा' लिटल चैम्प – डान्स रिएलिटी शो की विजेता बहन अंजली गायकवाड़ को एक हजार एक सौ ग्यारह गुलाबों का गुलदस्ता देकर सम्मानित करते हुए ब्र.कु.सुप्रभा बहन तथा डॉ.दीपक हरके। **8.दिल्ली-** 'खेलो इंडिया' स्कूल गेम्स में मेडल विजेताओं के साथ ब्र.कु.डॉ.जगबीर सिंह। **9.मण्डी-** हिमाचल प्रदेश के ऊर्जा मंत्री भ्राता अनिल शर्मा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.शीला बहन तथा ब्र.कु.दीपा बहन। साथ में डॉ.ओमराज शर्मा।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2018-2020 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2018-2020. Published on 20th of each Month &
Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : March, 2018.

ओ.आर.सी. (गुरुग्राम)- गीता महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, श्री श्री 1008 स्वामी शिवस्वरूपानंद जी, डॉ.एच.आर. नागेन्द्र, डॉ.सर्वानन्द स्वामी, स्वामी विश्वानंद जी, ब्र.कु.बृजमोहन भाई, ब्र.कु.शारदा बहन तथा ब्र.कु.उषा बहन।

मदुरई- नवनिर्मित 'प्रभु प्रसाद भवन' की नामपट्टिका का अनावरण करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी। साथ में हैं ब्र.कु.मीनाक्षी बहन, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, ब्र.कु.हंसा बहन तथा अन्य।

अमरावती (विजयवाड़ा)- यूनिवर्सल पीस रिट्रीट सेन्टर का नींव पत्थर रखतेहुए आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता चन्द्रबाबू नायडू, राजयोगिनी दादी जानकी जी, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, ब्र.कु.संतोष बहन, ब्र.कु.सविता बहन, अन्य मंत्रीगण, विधायक तथा सांसद।